

श्री यूद्धिभृत्युल्लनी श्रीसंवेदीवर्गे.

ज्ञापुस्तक

आवड लाईश्रोने भणवा वाच्यवाने अर्थे-

श्रीभुज्जापुरीभृद्ये

जाम्ब्ले सिटी प्रेसमां

आवड लीभरीह माणडे

चपावी प्रसिद्ध उख्ये.

संवत् १८६१ ना लान्दपट शुद्धि १२ रविवार-

सने १८०५ धसवी.

॥ अथ यूलिलस्त्रीशीयत्वेदिः ॥

॥ प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सयत्व स हुउरपासल्, शंजेच्चर
 शिरदारा शंजेच्चर छेशव वरा, हरतउरत
 उपगारा ॥ १ ॥ सरस बन्नरस वरसती, स-
 रसती लगवती हेह ॥ शुलभति घयड शुल
 भुइ, नेमुं निउरण येह ॥ २ ॥ लम्भुर यू-
 लिलस्त्रल्, साधु सकल शिरदारा ताप त-
 पित ऊरेन यथा, युइउहे हुः उरजहरा ॥ ३ ॥
 लवित वन्नेन पद पद्धति, रयशुं शीयतनी
 वेला बालड जाहु पस्तारीने, ललनिधि भा-
 न उरेल ॥ ४ ॥ सुषातां सज्जन सुजलहे, उ-
 न्नन भन उदाया पय पाने पुष्टि वधे, विष

013102
gyanmandir@kobatirth.org

धूर् त्रवत्धारी निश्चल
हुवे, लक्ष्मने शुणराणा वैराणी वैराण्यता,
पंडित वयेनशु लाग ॥६॥ नक्षत्रधूर् नक्षत्रवर
से लुवि, धक्षु प्रभु जरस वेभा येतुर विवेदी
रीज्ञशो, रथशु रथेनातेभा ाजा ॥

राढाक पहेली ॥ जो डुल मथुरारे वाहाला
एजे देशी ॥ पाउली पुरमारे प्यारे, नव नवरस
झेतु झ शणराणे ॥ सुजिया भाएरी रे व्यञ्जा, रा
न्न्य ऊरे छे श्रीनंदराज्ञ ॥१॥ पाउली पुरमारे
प्यारे ॥ जे खाउएरी ॥ सज्जाल मंत्री रे ज्ञापो,
नाणर नाति सुन्नत वज्ञाएरो ॥ उमलमुजी उम-
ला अनुसरणी, सुंदर लाछस हे तस घरणी ॥
पाउना रा पुन लखेरारे पामे, श्रीथूलि लक्ष्म
सिरियो नामे ॥ पुत्री साते रे मलीयां, नव नंद
न ते हुने अटुलीयां ॥ पा०॥ पाउतुराई डे-
रारे उहीयें, थानु नीतिशाखे अमलहीयो ॥

पेडित स्त्रै भेदे महतां रान स भाये विशेषे ल
 लतां ॥ पाणा ज्ञा शास्त्र पठन देशांतर इरीये,
 रहिये नित्य वेश्या भंद्रीये ॥ तो यतु राठीरी आ
 वे, ईमि थूलिल इ तिहां दिल ध्यावे ॥ पाणा पा
 तातनी आए आरे भागी, इव्य सहित यात्या
 वडलागी ॥ ऊश्य देखी रे थंले, शुल शाएगा
 र शरीर अर्थं ले ॥ पा० ॥ ६ ॥

राढाल जीळ ॥ गोडुलनी गोवालिएरी,
 भही वेयवा याली ॥ अदेशी ॥ वार वधू सोहा
 भएरी, झूपे रंगे सारी ॥ सउल स्व झूप निहाल-
 तां, सुर सुंदरी हरी ॥ ॥ ॥ शर धून मनो चंद
 मा, मुज देखी हरावे ॥ अधर अझ ए परवा-
 लनी, पए ओप मन आवे ॥ रा दंत जिस्या दा
 उभ उदी, झुल वयणे भरतां ॥ नासा ओप मन
 संलवे, शुड चंद्र्यु उधरतां ॥ ३ ॥ लोयनथी
 मृज लाल्यो, शशी भुल लेडो ॥ सुंदर वेणी

विदोऽने, इणिधर लुवि पेडो ॥ छापाएी
 येरएने ब्नेईने, बलपेडन वसीया ॥ उलश
 उरोनने हेजीने, लवणो दधि धसीया ॥ च ॥
 लंड उटीतट तेसरी, गिरिडंदर नासी ॥ मो-
 हुनी मंत्र मिशें घडी, धाने हहां वासी ॥ इ ॥
 द्वतणो चूडो झीयो, हर्षिये मोतीनो हार ॥
 उन्नरनी गति यातती, त्रण्य रत्न छार ॥
 उजेदलराणा हाथीया, नाजेशिर छार
 ॥ अबला ते सबला थर्ह, अमने धिःउ-
 रा ॥ उचुओ उसजीडेरनो, हाथे सोना
 नो चूडो ॥ मोहनगारी प्रेममां, रस वाईयो छे
 दूडो ॥ आपीर तिलड वाली सछु, रोले र
 एगार ॥ थूलिल-८ ते हेजतां, मोहयतेली
 वार ॥ १० ॥ हवे ते हरिणाहीये, जालिंयो धन-
 री नेह ॥ पीन पयोधर बागमां, लूलो पडयो
 ते ह ॥ ११ ॥ नित्य नवली कीड ऊरे, नित्य न

वला लोग ॥ सरस सुलोनन् अमृत समां,
 आरोगे सुरभोग ॥ १२ ॥ पंथविषय सुज
 दीवमां, बार वरस निगमीयां ॥ साढी जान
 रधन जोडीशुं, शुलरंगे रमीया ॥ १३ ॥

॥ आल त्रीला हो बसोदाना ज्या ॥
 अदेशी ॥ उलगयो नवी न्नएीयोरे, वेश्या
 विलुध्यो तेह ॥ छेल न छोडीयारे ॥ वरइयि
 ज्वालाएने संज्ञेगे, सउउल मंत्री लेह ॥ १४ ॥ छे
 लन छोडीयारे ॥ अंजाउणी ॥ नंद नरेसरउ
 पीयोरे, मंत्री मरण लहे ताम ॥ छेनारायें सि-
 रीयो तेडवीयोरे, दिये मंत्रीपटउम ॥ १५ ॥
 ॥ रामुञ्ज बंधव वेश्या घरेरे, रंगे रभे अंड
 यित ॥ १६ ॥ भांस लजे बलमाछलीरे, ता
 ससरीसी भ्रीत ॥ १७ ॥ उमंत्रीपणुं हीयो ने-
 हुनेरे, तेडवी भाहाराया ॥ १८ ॥ नंद उहे सिरी
 या प्रतेरे, झाणे तुं ठणे भया ॥ १९ ॥

(६)

सीज लही नरनारायनीरे, पोहोतो सरीयो
 त्याहे ॥ छेना अंधवने प्रएमी उहेरे, तेउ न-
 रिंद उरेहाहे ॥ छेना पासांल ली कोशयाने
 उहेरे, जर्ध आवुं अेक वार ॥ छेना हवे व-
 लतुं वेश्या उहेरे, सुण शुल वीरुमार ॥
 छेल ॥ ६ ॥

॥ ढाळ योथी ॥ तर्में वसुदेव देवजीना -
 ज्ञयाल्ल, लालल्ल लाडडज ॥ अेदेशी ॥ जे-
 श्या वेश्या उहेराणील, भनोहर भन गमता
 ॥ तिहां ज्ञश्यो पीडि सोलाणील, भनो-
 हर भन गमता ॥ नहीं ज्ञवा द्युं निरधारल्ल
 भनो ॥ आपये श्यो नृप दृष्टारल्ल ॥ भ ॥
 ॥ उरती यतुरा यिन्यादोल्लाभ ॥ ज्ञ-
 यो मुञ्जने देज्ञे गालोल्ल ॥ भ ॥ अेवडीशी
 उरवी आलोल्ल ॥ भ ॥ अेहु पुझने पाठो
 वालोल्ल ॥ भ ॥ श्रीतमप्यारा तुम दा-

ली छ ॥ मणा नहीं झोइनी हुं झोशीजा
 ली छ ॥ मणा आवशो जे अवनी ईश छ ॥
 मणा तेहने पए उत्तर ईश छ ॥ मणा जा
 झेम करता जे तुमे हिंडे छ ॥ मणा तो मुझने
 साथे तेडे छ ॥ मणा नवि छोड़ तुमयो डेडे
 छ ॥ मणा पूरव प्रीति रसरेडे छ ॥ मणा जा
 वनयरता अभर इल हींडे छ ॥ मणा यो अ-
 ता लागुं भीडुं छ ॥ मणा डोई देखए ति-
 हुं रढ भांडे छ ॥ मणा पए ने उरथी नवि
 छोडे छ ॥ मणा या तिम तुम सम हीरोपा
 यो छ ॥ मणा लाछल देवीनो जयो छ ॥ मणा
 रानुमे भोहुनी भंत्रने साध्यो छ ॥ मणा तुम
 शुं मुन प्रेम ते वाध्यो छ ॥ मणा इरसीया शुं
 हुं रंगराती छ ॥ मणा पीयु विरहे इटे छातील
 रामणा जा उली पालव अली छ ॥ मणा हुं
 तुमने अंतरवाली छ ॥ मणा जा थूलिल-इ-

हे हुठमेलो छामणा नृपलेटी जावीशवे
 हेदां छामणा तारां समन्ने डिहांरायुं छा॥
 मणा शुलवीर बनेन छे सायुं छाम० ॥ ८ ॥
 आढाल पांयमी ॥ गोकुलनी गोपीरेया-
 ली न्हल लखा ॥ अहे देशी ॥ उर ऊद ऊरीनेरे,
 याख्या युए लरीया ॥ धरी विनय विवेकेरे,
 छर्छ नृपने भलीया ॥ १ ॥ लूपालना भुज-
 थीरे, वात सङ्ल निसुएरी ॥ संसार स्वदूप
 नेरे, यिते शिर धुएरी ॥ २ ॥ भेवात न
 जएरीरे, वेश्या धर रमतां ॥ आतम युए हु-
 एरीरे, लुधां लव लमतां ॥ ३ ॥ ऊहे अवनी
 स्वामीरे, श्री यिंता डीबें ॥ सङ्लगलने पाटेरे,
 मंत्री पणुं लीबें ॥ ४ ॥ धूलिलस्त ऊहे तवरे,
 जालोयी जावुं ॥ जालोये जाणलरे, सु-
 ज संपद् पावुं ॥ ५ ॥ प्रणाम ऊरीनेरे, यशो
 ऊवने आवे ॥ समतत्व वियारीरे, लोये ऊ-

रीयो भावें ॥५॥ अरत्नं जवनोरे, तिहाँ-
 जोधो झीधो ॥ नर्धि राजसलायेंरे, धर्म ला-
 लज्ज हीधो ॥६॥ आलोच्यु शब्दरे, मस्तुड
 में ईहाँ ॥ भाहा व्रत उपर्युक्तवारे, लर्धशुं
 शुइ निहाँ ॥ टाक्षेश्या घर लुध्येंरे, नृप ब्ने-
 वा उड्यो ॥ शब्दो गंध मुनिसररे, हेजी दि-
 ल तूड्यो राट्टाथ्युलिलह मुनिवररे, पंथसी
 रें यखीया ॥ संलूति विजयल्लरे, मारगमां
 मलीया ॥७॥ शुइ प्रणभी जोलेरे, मुञ्ज ही-
 क्षा हीबें ॥ वहे सूरि सगानीरे, तो अनुभति
 लीबें ॥८॥ असिरीया डेरीरे, तिहाँ जाणा मा-
 णी ॥ जान्यारन पासेरे, लीये व्रत वैरणी ॥
 ९॥ सूरिसाथ विहारीरे, श्रुत नित्य अल्प्या
 सी ॥ आत्म सुविलासीरे, रहे उशुदवासी
 ॥१०॥ संबभूं रमतारे, निशादिन मुनिरा
 या ॥ नहिं भोहने भमतारे, रुक्ष समाराया ॥

॥१४॥ ईर्ष्णादिकृदशविधरे, वसीसामा
 यारी॥ चौमासा उपररे, युः अलिथ्रहय-
 री॥ १५॥ हूपांतर नवेरे, एक हरितंदीयें॥
 अहिबिल थूलिलन्दोरे, वेश्यामंदिरीयें॥
 १६॥ युः भाए विहारीरे, पातड़ां धोवे॥
 शुलवीर विवेकीरे, वेश्या वाट न्वेवे॥ १७॥

रागलछटी पासाहेलीरे, यिनीने प्या-
 लारे, तारा लखें लख्यां॥ जे देशी॥ हो सब
 नीरे, प्रीतमन्त्र प्यारोरे, हब्लय न आवीयो
 पहोसजनीरे॥ यातुररे नर जबर न जे ई-
 लावियो॥ होणा यात्यारे मुञ्जुरी, अवधि
 घडी यारनी॥ पहो॥ सुभीयो ते शु न्वेवे-
 इन नारनी॥ १॥ हो॥ जे उ विरह दुःख जी-
 झुं धन लख गडगडे॥ हो॥ दुःखीयानाशि-
 र उपर दुःख आवी पउ॥ हो॥ पावसमा-
 से लख वरसे धन धोशीयो॥ हो॥ माहुरेरे

कुंदपूर्ण तएो वन भोरीयो ॥ राहे ॥ प्रथाल्या
 रेना होना सु ॥ हो ॥ अंग विनानो पन-
 रे थानडने दहे ॥ हो ॥ अंगुठे धुंटीरे अंधा-
 ये रहे ॥ हो ॥ जनु ने साथलरे लग नाली
 ईरे ॥ हो ॥ जंधने छाती रे उरोज्ञ धरे ॥ हो ॥
 ॥ आ ॥ या ॥ हो ॥ सु ॥ हो ॥ गलस्थल लो-
 येनरे निल्लाडे शिरे ॥ हो ॥ विषधरनु विष
 व्याप्तु मणिमंत्रे हुरे ॥ हो ॥ विषया ऊशगी
 उसे मुझ ऊया गली ॥ हो ॥ लाछलहे ज्ञया
 विए नहीं जोर्ध नंगुली ॥ ज्ञा हो ॥ या ॥
 हो ॥ सु ॥ हो ॥ ईरीने वेसारे पीछे आ-
 वी मले ॥ हो ॥ दोगटीयो शाशगार तोमु-
 खने इसे ॥ हो ॥ बप्पे याने वाररे डिमपी-
 जे पीछे झरे ॥ हो ॥ पांजोरे छेहीने ऊपर
 लुण धरे ॥ प ॥ हो ॥ या ॥ हो ॥ सु ॥ हो ॥
 ॥ पीयु भावरो हुं पीछीनी पीयु पीयु हुंड ॥

होणा वेश्याने वल तुंसा लांजे सुंदृ ॥ हो ॥
 रा बर्पैयो पीयु पीयु उरतो तुमने लवेणा हो ॥
 ॥ थोडे थोडे हुआ जग दावुं सवे ॥ ३ ॥ हो ॥
 ॥ योगा होणा सुगा हो ॥ आधोढे जल वरसे
 गाने वीजली ॥ होणा वाहु लेसर विए शी सो
 पारी ऊजली ॥ हो ॥ ऊबंतर शुलं वीर मुनि
 वर आविया ॥ होणा जोश्याये मुज्जाइल शु
 रे वधाविया ॥ ४ ॥ हो ॥ योगा हो ॥ सुगा हो ॥

राढ़ा लसातभी ॥ सने ही वीरलु छय-
 ऊरी रे ॥ अे देशी ॥ वेश्याये वयाव्या स्वामी
 रे; ऊली झागल सा शिर नामी रे, उहे सां-
 भलो अंतर बनभी ॥ ॥ वालालु नी वाटडी
 अमे न्नेतां रे ॥ अे आंडएरी ॥ विरहा न लें
 दाधी देहरे, घणा वरस रही हुं गेहरे, प-
 ए नाव्यो नगीनो ने हु ॥ वाणा शा कमी स-
 मरे निशि घोरारे, नभ ब्रह्मधर अपे मो-

रारे, लल यातुङ्ग यंद यडोरावाणाआने-
 ठ मास तो नेम तेम उढ्योरे, मने भयए
 ते व्याप्यो, गाढोरे, वली अव्यो ते मास अा-
 षाढोरावाणाठा पउवे दिन पीजि सांलरतां
 रे, निशि भोरते ठुडाडरतारे, भाठ पहोरण
 यादुःख धरता रावाणापा जीक्षे जीक्षु उ-
 नें नीहालीरे, हुं जालपणानी जालीरे, मे
 हेलीमुङ्गने शुंटाली रावाणाइा त्रीक्षे टिख
 ल अङ्ग ब्नायुरे, पिनशालीये तुम झूप रायु
 रे, नेतां मनुङ्ग तिहां लायुरावाणाजायो-
 ये अवधि घडी याररे, उरी याव्या येतुर
 तल्ल नाररे, होय यार वरसनी वार रावाण
 ाठा पांयमे पंयामृत जाधोरे, पंय जाए
 तए रस वाढ्योरे, नेयो छुवन ऊर्यानीन
 लाधोरावाणाठा छहु छटडीने मेहेलीरे,
 जुओ यकुटे नाय सहेलीरे, हुं धरती दुःख

अर्देली ॥ वा ॥ १० ॥ सातमे दिन शत्रुघ्न
 लीरे, दीप धूप झुसुमने टालीरे, डीपुं शत्रुघ्न ते
 पासुं वाली ॥ वा ॥ ११ ॥ आठमे उठी परला
 तेरे, संलाख्यो पीडि बरसातेरे, निशिनाथ
 नउयो घणुं राते ॥ वा ॥ १२ ॥ नवमे निंदादिल
 न आर्द्धरे, निभ रंगपतंग रथार्द्धरे, छसी ना-
 गर बन्ति सगार्द्ध ॥ वा ॥ १३ ॥ दशमे देवल
 जहु मान्यारे, सुडनावलीये न्वेवाणारे, ईम
 डीधा घणां भेंछना ॥ वा ॥ १४ ॥ अष्टया-
 रशे अंग नमावीरे, नेई वाट वाताथने आ-
 वीरे, मने ऊम नटुवे नयेवी ॥ वा ॥ १५ ॥
 जारस दिन जार उधारीरे, घेर आवी अ-
 ही उर नाजीरे, सुपनांतर पीडि द्वगा-
 डी ॥ वा ॥ १६ ॥ आठ तेरसनो दिन मीठो
 रे, प्राणल्लवन नयएं हीठोरे, आठ अमृ-
 तस धन वूढो ॥ वा ॥ १७ ॥ यौद्धशदिन

यिंताटलशेरे, हीयुं घणुं हेळे हलशेरे, मा-
हरो प्रेम ते तमशुं मलशे ॥ वाणा १ दा शाए-
गार सल्ल संयरशुं रे, इब्नीयांथी नवि उरशुं
रे, पूनम छिन पूरा ठरशुं ॥ वा ० ॥ १ ॥ ते
रस पे हेलानो जगावोरे, तिथि अर्थ ऊरी धे-
र आवोरे, शुलवीर वयनशुं मलावो ॥ वा ० ३ ॥

राढाल आठभी ॥ सांललरे तुं सलनीभो-
री, रजनी डिहां रभी आव्यांल्लरे ॥ अे देशी
॥ राज पधारो मेरे मंदिर, शाय्या पावन डी-
ले ल्लरे ॥ दासी तुमारी अरज्जु उरे छे, नर-
लव लाहो लीले ॥ रस लर रभीये ल्लरे ॥ १ ॥
पूरब नेह निहालि रसलर रभीये ल्लरे ॥ अे
आंकडी ॥ शान ऊरंतां साहुं ब्लेशुं, तुम
आए ॥ शिर धरशुं ल्लरे ॥ डोई छिवस तुम-
ने अएगम तुं, ऊरज डोई नऊरशुं ॥ २ ॥
सलर रभीये ल्लरे ॥ पू ॥ २ ॥ धूलिलन्

उहे ऊश्याने, तथ्यपत्थमित वाएील्लरो॥
 पाएी विना शीपाल ऊरे छे, लोकन विए
 उब्जेणी ॥३॥ पू०॥र०॥ ऊठ हाथ तुं अल
 गी रहिने, इल याहे ते ऊरले ल्लरो॥ नाट-
 ऊ नव नव रंगे ऊरले, वली शणागारने घरले
 ॥४॥ पू०॥र०॥ षट् रस लोकन तुम घर
 वोहरी, संबम अर्थे आशुं ल्लरो॥ अभ पर-
 डीने रहा योमासुं, ऊश्या ऊरे हवे हांसुं॥५॥
 ॥५॥ पू०॥र०॥ विए पूछया संबम आय-
 रीओ, पए ते ब्रत नवि पद्धिं ल्लरो॥ तो
 अभ घर आव्या छो पाछा, तुम ब्रत अभ ने
 इलीजिं॥६॥ पू०॥ जार वरस्स प्रेमे वि-
 लस्या पए, अवजो अंतर न हाज्यो ल्लरो॥
 नेगारंल तब्ब मुन साथे, रंग हुतो ते रा-
 जो॥७॥ पू०॥र०॥ निर्वेली निर्मही पए॥
 शुं, सुए ऊश्या अमेर हीशुं ल्लरो॥ योग

ਕਥੋਂ ਸ਼ੁਲਵੀਰ ਨਿਨੇ ਸ਼ਰ, ਘਾਣਾ ਮਸਤਕ ਵ
ਦੀ ਝੁੰਪਾਰੋਹਾ ਪ੍ਰੋਪਾਰੋਹਾ

ਗਾਡਾਨ ਨ ਬਮੀ॥ ਤੇਂ ਨਾਰੀ ਵਿਨਾ ਸੁਖ
ਯੋਧੁੰਰੇ, ਸੁਦਰ ਸ਼ਾਮਲੀ ਯਾ॥ ਅੰਦੇਸ਼ੀ॥ ਮੇਂ
ਲੇਗ ਤੁਮਾਰੇ ਜਣਿਆਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਾਤਲੀ ਯਾ॥
ਸ਼ੀਝਰ ਵੀ ਤਾਣਾ ਤਾਣੇਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਤਮ ਪਾਤਲੀ ਯਾ॥
ਤੇ ਲੇਗ ਤਥੁੰ ਇਲ ਲੇਵੇਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਨੇ ਲੇਗੀ ਲਾਣ
ਲ ਸੇਵੇਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਪਾਵੇਖਧਾ ਮੰਦਿਰ ਤਲ ਲੋਗ
ਈਧਾਨ ਪੂਰਵੇਂ ਤੇਣੋਂ ਸਾਈਧੀ ਲੇਗ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਘਾ
ਧਿਤ੍ਰ ਸ਼ਾਲੀ ਮਨਮਾਨੀ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਪੱਧੇ ਬਾਣਾ ਤ
ਏਹੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਚਾਲੇ ਤਾਂ ਰਫਲ ਲਾਗ ਰੇ
ਤ ਮਨੇ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਲੇਗ ਮੇਲਿ ਮਲਾਵ ਦ੍ਰਹੇ ਅਮਨੇ
ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਪਤਿਵਾਈ ਤਹਿੰ ਲੋਡ ਗਾਝੇ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਨ
ਾ ਤੇ ਲੇਗ ਤਾਣਾ ਧੀ ਨ ਸ਼ੇਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਤਾਂ ਤੇ ਮੇਲ
ਟੇ ਕਥਨ ਮੁਝ ਮਾਨੋ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਨਾ ਛੁਮਣਾਂ ਲੇਗ
ਛੇਂਦੇ ਛਾਂਨੋ ਰੇ॥ ਪ੍ਰੀਣਾ ਰਮੇ ਰੰਗ ਲਾਰੇ ਤਲੁ ਘਾਂਦ

दीरे॥ प्रीणा भने भोटी प्रेमनी घांटीरे॥ प्रीणा
 राझा योमासुं ने यिनशालीरे॥ प्रीणा तुम
 लाञ्छे भद्री संटडलीरे॥ प्रीणा रसप्रेम हीं-
 डेले हिंयोरे॥ प्रीणा तझेणी तनसेलडी सीं
 योरे॥ प्रीणा पा धरी प्रेम पीतांजर पेहरे
 रे॥ प्रीणा रस हीपड जोलो होहुरोरे॥ प्रीणा
 मुञ्जबाहे ग्रहीने लीज्जेरे॥ प्रीणा ऊरी प्रेमने
 अंतर डीज्जेरे॥ प्रीणा हा प्रेम पूरण शयोष्टिल
 गांठेरे॥ प्रीणा ब्जेई लेब्जे शेलडी सांठेरे॥
 प्रीणा रजनी गर्छि सुनी सज्ज्यरे॥ प्रीणा अवडी
 उयांशी ज्यालज्जतरे॥ प्रीणा आजा अलिभाने
 येद्या छो बसीयारे॥ प्रीणा रामारस दुए न
 विच्यसीयारे॥ प्रीणा ईंश्चादिक बे लोङपालारे॥
 प्रीणा सजला अजला जोशीजालीरे॥ प्रीणा द
 ारही जोलावेडर ब्जेडीरे॥ प्रीणा इंहीं डेश्यामु
 हमयडोडीरे॥ प्रीणा शुलकीर क्यन मुनिजोले

रिप्रीणात्रुषिरामापेटंतर तोलेरेआप्रीणा छा।
 राढाल दशमी॥ ईवरियारमोरभएरि-
 समेलीनेराज्ञेशीरारमणीशुंरंगरसेंरमतां,
 साधुनुं संबभन्यरारंगीली॥ रमोभारणडो
 मेलीनेराप्रेमद्वपरहुरवी भुनिवरने, अेझांते
 कहु निनरायरारंगीली॥ रारभेभारणलि
 भयुएन्येउस्तूरीनो, ब्नेदीनेहिंगनो वान-
 सारारंगा कुपूर तएतो शुए लिभ लगे, धरीयें
 जेलशएनेपासरारंगाशारमो॥ वरपंडित
 भूर्जनेसंगें, वायस देलाभांहुसरारंगापापि-
 ष्ट अनायारीसंगे, धमिष्ट पणुं कुखवंशारारंगाड
 रारणा अखच्छवहूयें रसोईतएतो, बंजुसंगें
 लिभ नाज॥ रारंगा गलीपासें उल्लदवर्ण
 घटें, योरीसंगें शुएलाज्ञारारंगा छा। तिम्भान
 निनीसंगें भुनिवरा, थूदिलन्दकहु सुएनार
 रारंगाक्षणभान्न भहीलाशुंभाले, होये हुर्गति।

दुःखलंडरारंगापार० ॥ तु व्याङुलताथ
 ईविरहिणी, मेंवशकीधो छे जमारंगाशुल
 वीरवयननी यातुरी, ओश्यावेश्याउहे ताम
 पारंगा ॥ १ ॥ रमोणा

राढ़ास अग्यारमी ॥ राजुलेंरही रा-
 ल्यापातलीयाल्ला ॥ अमेहेशी ॥ नेई ल्लेईरे
 नेणतुणी दशा ॥ अलजेलाल्ला ॥ तमोनारी
 नी निंद्ये वस्या ॥ अलजेलाल्ला ॥ भनगमतां
 लूषुण लावता ॥ अगा सुंदूर शाणगार ध-
 रावता ॥ अगा ॥ कुरञ्जालिने बेसारता ॥
 अगा कुरता वस्तुल वारता ॥ अगा वर ऊव-
 लजरी घृत लेलीया ॥ अगा भें तुम मुझमाहे
 मेलिया ॥ अगा ॥ वली तुमये हाथे हुंब-
 भी ॥ अगा तुम डीत्संगे रंगे रभी ॥ अगा हु-
 वे डीपराठां तुमें डेमथया ॥ अगा ते दिवस
 तुमारा डिहां गया ॥ अगा उा दोषा कुर दयि-

तां उमिं ऊहो॥ अगा ऊं हिं प्रीतनी वात नवि
 लहो॥ अशा दोय ऊन सुरत अे ऊरीतडी॥ अग
 ॥ दोय नयन ऊती सभ प्रीतडी॥ अगा॥ इ
 अलव विष्णुसे संज्ञम वरी॥ अगा॥ गुण ग
 ए विघटे गरवें ऊरी॥ अगा॥ दरिद्र दशा सुझू
 पे हरे॥ अगा॥ अहु तप विष्णुसे कोध न धरे
 ॥ अगा॥ पा॥ रब लेप विना से देहने॥ अगा॥
 तिम विरहु न साडे स्नेहने॥ अगा॥ नग धन
 यडी ऊरति रहे॥ अगा॥ शुरि विनय ऊरता गु
 ए लहे॥ अगा॥ दा॥ शशि दर्शन सायर सधे
 ॥ अगा॥ ऊद्यम ऊरतां लक्ष्मी वधे॥ अगा॥ ऊल
 लज्जन रहे आये अरथी॥ अगा॥ नर राग वधू
 शाणगा रथी॥ अगा॥ छा॥ हुवे धान्य यथा वृ-
 ष्टि यडी॥ अगा॥ तिम प्रेम वधे दृष्टि यडी॥ अग
 ॥ अगा॥ दीन वयन नारी वदे॥ अगा॥ नवि लेहे
 ऊम तुभये तहे॥ अगा॥ निशि योरपो-

होर वाटी छले ॥ अ० ॥ पए लोडु हुहे दीवो ब
ले ॥ अ० शुलबीर धीर मुनि तो पडे ॥ अ० गा
ले पावधि ने पानो येडे ॥ अ० गा छा

ताढाल बारभी ॥ मने अली छशोदा-
ने छुर्येरे ॥ अे देशी ॥ थूलिल-इहुहे सुण
जालारे, तु श्याने उरे छे यालारे ॥ विनिता-
शुं जस विलासरे, ते नर हुः जीयाना दास
रे ॥ १ ॥ जेबनीयानो छे लटकोरे, ते तोये
र दीवसनो येटकोरे ॥ पछें कायेनो शीसोल
दक्ष्योरे, काँडिं झामन आवे इटकोरे ॥ राजु
गटीयानो अखंडाररे, नारडीयाना शणगार
रे ॥ धनवंत हुओ निर्लाभ्यरे, लेह्वो संध्या
यें रागरे ॥ ३ ॥ दूप ल पीपलनुं पानरे, उपटी
नरनुं लिम ध्यानरे ॥ लूपाल तणुं धणुं भान-
रे, चेल उं जरुरे ॥ ज्ञानायेपला नारी
नां नयएनांरे, हुर्फननां भीठां वयएनांरे ॥ ध-

ती यार तएरी यांचरएरीरे, पछी घोर अंधा-
 रीरयएरीरे ॥ प्रासंसार स्वझुपने हेजीरे, में
 मेली तुझने उवेष्टीरे ॥ डोर्झायुने ताळ्बुवे
 तोलेरे, पवने उनडायलडोलेरे ॥ इत्तारविष्टां
 यारने यूडेरे, लक्षणि मर्यादा भूडेरे ॥ अलोड
 मांहे होय ज्वुरे, पण हुं तुझ हाथ न आवुं
 रे ॥ उप्रूपरे रभीयारंग रोलेरे, आज तुं प-
 ग भोजडी तोलेरे ॥ पहेलां तो ऊहीं न दीहुं
 रे, हवे संज्ञम लाण्युं छे भीहुंरेटा मायदा
 पने में परि हुरियांरे, भात तात नवा भेंडरी
 यांरे ॥ तब्ल बांधव डेरी संगाईरे, में कीधा
 नवा दश लाईरे ॥ उद्य नामे छे यित्र शा-
 लीरे, परएरी घरएरी लटजलीरे ॥ विष तेल
 दीपड अब्लु आलेरे, यार शाय्या ते नित्य
 ठालेरे ॥ १०८ नित्य अमृत लोजन लभीये-
 रे, रसरंग ल्लरे घेर रभीयेरे ॥ शुभि धूप

ઘટી પ્રગટાવેરે, તિહાં તાહું ઝાંદ્ધિ ન ઇવેરે
 ॥ ૧૧ ॥ નવ કોટ બયેં અદ્ગામરે, નિત્ય રહિયે
 છેયેં તિએ ડામરે ॥ સ્વામી બલીયા શિર તાબ્ન
 રે, શુલ્વવીર પ્રલુષ રાબ્નરે ॥ ૧૨ ॥ ઈતિ ॥
 રાદાદ તેરમી ॥ આવો ઇરિ લાસરીયા
 વાલા ॥ અ દેશી ॥ ડોશયા ઉહે સુપાને સુમને,
 આશોં નીરાશ ઊર્ધ્વાં અમને, પ્રીતમળ ન ઘટે
 તુમને ॥ ૧૩ ॥ રસીલા સાથેં અમેરમશું, ઊડી પ્રન
 લાતેં સદ્ગાનું, નિત્ય લમાડી પછેં લમશું
 ॥ રસીણ ॥ અ આંકણી ॥ અહેહ સગાઈ નવી
 ઊરવી, પીડી ન ઘટે ભતીઅ ઘરવી, પૂરવ ના-
 રી પરિહરવી ॥ રગારા જાર વરસ સુખસા-
 લુરતાં, સાલે હૃદિભાં બલતાં, ઝાંજેં ઝાંસું
 ઊરતાં ॥ ૧૪ ॥ તામાસ આષાઢે અનેક ઈ-
 લે, દવદાધી તરે વેલી વલે, વલ્લલ વિરહેં દે
 હ બલે ॥ ૧૫ ॥ આવણીયો સીયે ઘરતી,

मोर लड़ी टहुं ऊरती, जाए ली ऊभवशे
 ऊरती ॥ १ ॥ पा लाए रवे लरबल वरसे,
 पंजीयुगल माले डरशे, विरही नारी डिशुं
 ऊरशे ॥ २ ॥ र० ॥ आशो मासें ईवाली, सा-
 ऊर सेवनें सुंजाली, छांडी थाली पीयु भाली
 ॥ ३ ॥ र० ॥ दूध सीता ससी लोबनमां, ऊर्ति-
 के उत्तीतएं वनमां, देखी साले घणुं मनमां
 ॥ ४ ॥ र० ॥ भार्गशिरें मनमथ न्यगे, मोहुनां जान
 ए घणां वाणे, दुःख मोहुन मलतां लाणे ॥ ५ ॥
 ॥ ५ ॥ र० ॥ पोष ते शोष ऊरे धान, शुं ऊरे सोपारी
 पान, वखल विण न वले वान ॥ ६ ॥ र० ॥
 माहुमासें टाढ्यो पृडशे, शीतल वायु वपु
 चेडशे, नाम अनंग घणुं नडशे ॥ ७ ॥ र० ॥
 ईशुएं जउ जउती होली, पेहरी यरएं ने
 योली, उसर घोली भली योली ॥ ८ ॥ र० ॥
 दोऊ वसंत भधु रमशे डोयल अंजवनें लभ-

शे, तेहिन मुञ्ज सायें गमशो॥१॥आरणा
 वैशाखिएं सरोवर लर्षिणु, उतडीयं द्वन वन र-
 हि शुं, हेजीयं र रीतल थर्षिणु॥२॥आरणा
 पथी पशु प्रेमदा भेला, न एरीयें मध्य नि-
 शी वेला, लैठ अपोरे लली वेला॥३॥आरणा
 मोहन भावालो भेहर उरी, दधिता देषी हुः-
 अ लरी, आरे भास विलास धरी॥४॥आरणा
 ॥नाटक रंगरसे उरशुं, हाव लही इलु हर-
 शुं, उहे शुल वीर नवि चलशुं॥५॥आरणा
 ॥दास यौद्धभी॥६॥आवो आवो रे छ
 शोहना डान गोडडी उरीयें रे॥७॥आरणा
 मुनिराज उहे सुपो वेश, हाव न भाव्यारे॥
 देवा तुमने ऊपरेश, अमो ईहां आव्यारे॥
 ॥८॥गयो अटलो झाल विशेष, उदानविकुरी
 योरे॥९॥साहेजीयानो ऊपरेश, सदा अनु-
 सरीयोरे॥१०॥जिन धर्मवशें शिवनारि, नां

सुभयाएरे॥ जोई अे संसार असार, ग-
 यो ब्रत पांजेरे॥ उा संसार मांहे अड सार,
 वलल नारीरे॥ छामें ध्याननी ताली कगाई
 नीशान यदायांरे॥ शील साथे झीधी सगाई,
 तछु लवभायारे॥ प रावाल्हा अडिविस
 रीसाएी, हुती तुमसाथेरे॥ डिम बोलावी
 चीरताएी, तदा होय हाथेरे॥ हा सुरा-
 पाने लवलोड, शुंशुं न उरतारे॥ डिंपाड
 इलाशी लोड, पछे हुः अ घरतारे॥ जा भ-
 ने विरह तएी क्षण अन्य, वरस समाएरि
 ॥ धएी भोहु तएी द्वूचाय, वलो शयोपा-
 एरिरे॥ टा ताहुरे भोहु लनड रस बोलें,
 अन छूटेरे॥ मंबनरी तलपनी तोल ते
 शिंगुं न त्रूटेरे॥ जा नागरनी निर्दय अ-
 त, बोले मीहुंरे॥ जालन्मांडपटनी धात,

में प्रत्यक्ष ही हुंरे ॥ १०॥ शुं कुहीये अनाएँ
 लोडने, दूषण लागेरे ॥ अही साधुना तळै
 क, कुहुं वीतरागेरे ॥ ११॥ वीतराग शुं ज्ञए
 राग, रंगनी चातेरे ॥ आवो हेजाहुं रागनो ला-
 ग, पूनमनी रातेरे ॥ १२॥ शशागार तल अ-
 एगार, अभें निर्देलीरे ॥ भवडखी कशुं
 विहार, भेली तने उलीरे ॥ १३॥ वाला जा-
 र चरस लगें ठेठ, लाड लडावीरे ॥ डिमनां
 जो धरणी हेठ, भेड़यें यदावीरे ॥ १४॥ डां
 डता लीजे दृष्टांत, नरलव लाधीरे ॥ थर्द
 पंय महाव्रत वंत, भेड़परे वाधीरे ॥ १५॥
 ज्ञूञ्जो नाटुनेखेडवार, नयण विजाशीरे
 ॥ पछे संज्ञम लेब्ने सार, वियार विभाशी
 रे ॥ १६॥ शुल वीर सहेली बहुतर, नाटड
 नयएांरे ॥ अेड अेकद गाथा अंतर, जे-
 हुनां वयएांरे ॥ १७॥

राढाल पन्नरभी॥ राज उछवे लाव-
 एरी॥ अदेशी॥ भंबन यीर तिलड आधं-
 त, यतुर शाणगार सझर धरी॥ मनोहरशि-
 रवर यीवर यंली, कौसंलीडी सोलु करी॥
 ॥ यिहुं दिश लाली झुलडी जली, दीपड
 माली ब्योति वरी॥ धुर परिणाम सजमहु
 रामा, रामा रंगे गेलडरी॥ रानव नवरंगे
 छंह छपैया, ओयरीया रसयुष लरीया
 ॥ ठमड ठमड पग लूतल ठमडे, अमडे र-
 भञ्जम ऊञ्जरीयां॥ उत्तदयानंदन डे-
 तडीयंदन, झुल अमूल मलड भलडे॥ जस
 कु जलड उर उङडण जलडे, उलड ऊलड
 दीडों अलडे॥ ना जरमर जरमर मेहुलो
 वरसे, जलसे लरी लरी वालीयो॥ घनन
 घनन घनघोर अघोर, गाले राले वीली-
 यो॥ पा हुकु हुकु अविकेडानेडा, लेडा

सोरसन्नेर धने॥ कुहुकुहुकुहुक रसीता नी-
 ला, डेडीला सहजर वने॥ अहुत पीपा
 सी भेघ लखाशी, इसी वनवासी वेलडीयां॥
 प्रेम तणां रसरेखायात्या, पए थूलिलन्न नवि
 पेड़ियां॥ जाहुक टहुक गिरि डेझ छेझ, उर
 ता डेडी भाल्हे छे॥ वैरीनी परे अे वरसालो,
 विरहीने धणुं साले छेआना धपभप भाल्ह
 के धोंडारा, कंस ताल बीणा संघरी॥ ताथे-
 ई ततथेर्ध तान न धूडे, मूडे नेत सहुत ध-
 री॥ इरसत क्षणातर उतल लूतल, यं
 यल अंयल उर लेती॥ गीतरीत मृद मोद
 विनोदे, इरड इरड इु इडी हेती॥ नालख
 क लखक ढलक ती ऊया, ऊय ढलाया मेंछ
 या॥ छुवनके परी नेह उपाया, अयन वेद
 उरती भाया॥ प्रीतम प्रेमडी बात लिपा-
 रो, ल्नमन ल्नमन रोतो लमरो॥ अधा डेत-

ਕੀ ਲਸਮੇਂ ਲੋਰਾਤ, ਪੰਡਿਤ ਪ੍ਰਭੁ ਤ ਝੱਈ ਤਰੋ॥
 ੧੨॥ ਲਮਰ ਤਹੇ ਮੋਥ ਦੇਹੁ ਦਹੇ ਅਭੜ, ਵਿਰਹੇ ਤੇ-
 ਤਡੀ ਨਾਰੀ ਤਣੋ॥ ਤਸ ਰਕਾਧੇਂ ਵਿਰਹੇ ਸਮਝੁ, ਰ
 ਮਝੁ, ਨਹਿੰ ਮਤੂ ਘੇ ਦਮਣੋ॥ ੧੩॥ ਤਹੇ ਤਵੀਤਾ
 ਸ਼ਾਮਲਤਾ ਸਥਨੁ, ਪੀਖੀ ਪੁਠ ਕਿਥੁੰ ਜੀਧੀ॥
 ਪ੍ਰੇਮਝੀ ਯੋਟ ਲਗੀ ਮੋਥ ਬਹੁਲੀ, ਤਾਸ ਤਿਪੁਰ
 ਫੁਲਈ ਦੀਧੀ॥ ੧੪॥ ਤਰਿਧਿੰਤ ਬਦਲੇਂ ਲਟਕੇ ਚ-
 ਟਕੇ, ਮਟਕੇ ਨਵਿ ਅਟਕੇ ਰਾਗੇ॥ ਪ੍ਰੀਤਝੀ ਰੀਤਿ ਅ
 ਨੋਪਮ ਨਾਟਕ, ਊਰਤਾਂ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾਨ ਮਾਗੇ॥ ੧੫॥
 ਤਹੇ ਸੁਨਿਹੇਲੀ ਸੁਏਂ ਅਲਬੇਲੀ, ਨਾਟਕ ਨਵਿ
 ਊਰਤਾਂ ਆਵੇ॥ ਅਗ੍ਰੀ ਸ਼ੁਲਕੀਰ ਵਲੁਰ ਪਸਾਧੇ,
 ਲਕਨਾਟਕ ਸੁਣਨੇ ਲਾਵੇ॥ ੧੬॥

ਗਾਢਲ ਸ਼ੋਦਮੀ॥ ਦੇਖੀ ਮੋਰਲੀਨੀ ਛੇ
 ਗਾਮੇਘਰਾਗ ਉਰ ਲੈਰਵ ਤਰੀਯੋਰੇ, ਉਦਧਨੀ
 ਵੇਲਾ ਮਾਲਵ ਤੋਝੀਝਾ॥ ਪਹੌਰ ਸਮੇਂ ਮਧਧਾ-
 ਨੇਂ ਫੀਂਡੀਲਾ ਦੀਪਕ ਰੇ॥ ਪਾਛਲੇ ਪਹੌਰੇ ਅਗ੍ਰੀ

ઊપદેશીકા ॥ નાટક મેં ન હીઠું અને તો લેશિં
 ડારા ॥ સંતસારે વસીઓ રાગે તાણીયો ॥ અય-
 વહુરે રસીયો જ્ઞતે વાણીયો ॥ વગડાનો વા-
 સી ખાશી પ્રાણીયો ॥ અવિનાશી નીરાશી
 ધર્મ ન જાણીયો ॥ અને આડણી ॥ ચંદ્રાદર
 ન ચંદ્રામાં વેશ જનાવેરે ॥ મિથ્યાત્મે પૂ-
 રિ રાત્ય અંધારિયો ॥ સૂક્ષ્મ જાદુ એજન
 અપજન નિર્ગોદ્ધરે, નાટકમાં લૂલ્યો મોહેંમા-
 રિયો ॥ નાણની ન દીઢી અને બારીયો ॥ રા-
 સંગાલ્યું ॥ વં ॥ અના વિગદેંચિય પંચિંદી
 થયો અનુક્રમે રે, ઝૂપધની દોલાગી વલી
 સોલાગીયો ॥ બાલ ડાંડા વિડરાલ ડાંડા લૂ-
 પાલો રે, અવિવેકી પંડિત રસનો રાગીયો
 રારમણીને રંગે ડોઈ દિન સિદ્ધિ લાગીયો ॥ ઉ-
 પસંગાલ્યું ॥ વં ॥ અન ॥ જનરંજન ડીપંદ્ર
 શેંડાદરને લરીયો રે, લોગીને લેજી વેશ જન-

नावीयो ॥ नागरने यंजलयद्यो वरघोडे
 रे, घोडेरे आणें हसु उहावीयो ॥ सिद्धिलो
 वेश कुटा नविलावी ओ ॥ नासंगाव्यनावण ॥
 अणा मातने जेन थयां नारी तिम भातोरे,
 ल्यातने तात हुआ संतानमां ॥ त्रूभंडल ठ-
 डुरियो थर्हने जेडोरे, सुएन्नेरे साने ऊ-
 शया ऊनमां ॥ जेउलडोरोयो झोर्ह इनरान
 नमां ॥ प ॥ संगाव्यनावणा अबायेडि पूर-
 खधर पोहतां ने सुरखोडेरे, पूरव श्रुत हे-
 शथडी संलारतां ॥ येशण धरम धरवानी ता
 स न शज्जितेरे, विषया ऊस यित्ते सुजने से-
 वता ॥ अनुगामी अवधि नारप्पी देवता ॥ ६
 ॥ संगाव्यनावणा अनासिंग अनंतां धरि-
 यां ऊमन ऊरीयांरे, होळीनो राज्ञ शुएवि-
 ण संबभी ॥ नवविष बुवनी हिंसा निर्द्य
 झीधीरे, वासुदेव यडीयेडि रखावमी ॥

नारडीमां पोहुता गुणिलननें हमी ॥७॥
 संबाव्यगावणा अगा ज्ञाति समरए नारे
 नारडी ज्ञारे, पूरव लव केरि सुजनी वार
 ता ॥८॥ शाविध वेद्य छेन लेन पामीरे, आ
 युने पाली तीर्थये नता ॥ भाताने पुन्र विवेक
 न धारता ॥९॥ संगाव्यगावणा अगा श्री
 शुलवीर उद्गां वयए रसालांरे, सालखतां
 वेश्या पित्त डीपसामीयुं ॥ त्रण डरए शुंग-
 डी लेद उरंतीरे, मिथ्यात् अनादिडेवं वामी
 युं ॥ डोश्यायें सूधुं समडित पामीयुं ॥१०॥ सं
 व्यगावणा अगा

॥११॥ सत्तरभी ॥ ईषण सदूएं नाथ में
 रे घेर आवोने ॥ अे देशी ॥ मिथ्यात् वामीने डो
 श्या समडित पामीरे, हुर्षथयो अतिरेक ॥
 वाखारा पारस लोह विवेक ॥ वाला ॥ वर्यन
 उहे साढेक ॥ वाणा अत्रव ते संकरथयोरे,

भाहरे सुपो मुनिराय ॥ वाणा लाछ दहे
 धन्यभाय ॥ वाणा धन्य धन्य तुम युशराय
 ॥ वाण ॥ १ ॥ धन्य धन्य अे चित्रशाली रसा
 लक्ष भारोरे, समडिन मूलब्रत जार ॥ वाण
 तसाधुल पासें सार ॥ वाणा उद्योगिया ध
 री प्यार ॥ वाणा ऊरे सामायिक नित्य प्रत्यें
 रे, योभासुं वही नय ॥ वाणा साधु विहार
 कराय ॥ वाणा कोशयाने हुः अथाय ॥ वाणा
 शान्तुवे गुशल वाट अमें हवे नर्धशुंरे,
 पूलले निन बयजर ॥ वाणा पाले लेव-
 त जार ॥ वाणा टालेने अतीयार ॥ वाणा
 अम शीणामण दैर्घ इरीरे, यालतां अण
 गार ॥ वाणा कोशया आंसुं धार ॥ वाणा ध-
 र्मसनेहनो प्यार ॥ वाण ॥ २ ॥ हु ऊर हु ऊर
 ऊर ऊहे युशरायारे, सिंह गुश्मासुनि ऐर
 ॥ वाण ॥ हु ऊर ऊर ऊमेद्वाणायाल्या

शुद्धवय छेदा वाणा डमणगारी विलो-
 उतांरे, यलीया डमने देशा वाणा डेशया
 ने डिपदेशा वाणा थिरडीधो मुनिवेशा वाण
 ा रथडारड प्रतिबोध लह्यो डेशयाथीरे,
 पंय भाहुन्रत धारा वाणा पाभ्यो सुर अ-
 वतारा वाणा डेशयाने डिपगारा वाणा डे-
 शया धर्म ऊरिने गर्छिरे, शुलगति अवतारा
 वाणा अल्प उख्यो संसारा वाणा धन्य ध-
 न्य अे जग नारा वाणा धा अठ वरसमा
 अठ पूरव भुनि लएीयारे, अमनिल निस-
 त्य अल्यासा वाणा लन्ह आहु शुद्धपास
 ा वाणा रहेतां शुद्ध कुल वासा वाणा अर्थय
 डी यडी ध पूरव लएयारे, डेर्ड उहे दश सार
 ा वाणा सूत्रे अंतिम यारा वाणा श्रुत डेवसी
 निरधारा वाणा इ नीश वरस धर वास वि-
 सासे वसीयारे, वरस ब्रते योवीशा वाणा

युगपदे पीस्तालीश ॥ वाणा आयु नवाएं
 वरीस्ता वाणा श्रीशुलवीर प्रलुब्धजीर, वर-
 स पन्नर शत होय ॥ वाणा सुरलोडें सुर होय
 ॥ वाणा अे मुनिसम नहीं कोय ॥ वाणाजा
 राढाल अढारभी ॥ प्यारा सरद पूनम-
 नी रात, रंगलरे रभीये लेखारे ॥ अदेशी
 रागायो गौतम गोत्र बुणिंद, रस वैराग्य ध-
 ए ओ आयोरे ॥ मुनिवर तारउमां अे यंद, यु-
 एरीयो लाछस हे ज्योरे ॥ १ ॥ योराशीभी
 योवीशीये अड, मुनि थूलिलन्द समाधाशे
 रे ॥ तास पटंतर ब्रतनीटड, युणिन्हन् नि-
 न मुजथी गाशेरे ॥ २ ॥ तपेगछमां उे सरी-
 यो सिंह, सिंहसूरि सुतबल दरीयारे ॥ सत्यवि-
 लय संकेग निरीहु, उपूरस मुज्जन्वल युए
 लरियारे ॥ ३ ॥ अभिमाविलय वसी उपशंद
 त, सुबसविलय अंते वासीरे ॥ पंडित श्री

शुलावेन्य महंत, नग निनमत् येरता
 वासीरे ॥ भा तास विनये अे अणगार, शा-
 स्त्र तरी सापें ध्यायोरे ॥ सहस अढार सी-
 लंगना धार, ढाल अढार उरी गायोरे ॥ पा-
 अढारशे बासठे शुदि पोष, बारस उश्वरे
 ध्याईरे ॥ राजनगर मुनिवर निर्देष, शिय-
 दवेली प्रेमे गाईरे ॥ ५ ॥ धर्म ओछव समे-
 गाशो लेह, नर नारी सुणाशो लएशोरे ॥ उहे
 उवि वीरविन्य नित्य तेहु, शुपि विमलाऊ-
 मला वरशेरे ॥ ६ ॥ इति श्रीवैराण्यहीपुड
 भद्रन भ्रीपुड घने ड युएन ननितो ल्लव लाव
 बखरे लिरंतः इत केलिः शीयलवेलिः श्री
 थूलिलन्दस्य परिपूर्ण ॥

अथ श्री थूलिलन्द्लुनो नवरसो प्राप्त
 रादोहा ॥ सज संपति दायक सदा पा-

यड बनस सुरिंदा शासन नायड शिवगति
 वं हु वीर निषंदा रा लं भूद्वीपना लरतभा,
 पाडलीपुर नृपनंदा शडडाल में तोतसप्रि-
 या, लाछल हे सुजडंदा शा नाशरिन्याति
 शिरोभएरी, नव तेहुने संतान रासात सुता सु-
 त दोय तस, वंश वधारणवान राजा थूलि
 लर्ल लोणी ल्लभर, भुनिवरभां पण स्तिंहा
 वेश्या विखुध्यो ते सही, न गणे रातने दीह
 राजा कनड टज तेए वावर्या, साडी जारहु
 उडी प्रवरश जार वोली गया, पए छेल न
 शड्यो छोडी पा पा शडडाल में हे ते तिण सन-
 मे, उविश्वर हुह्यो झोय पाते भाटे भरबुं पट्युं
 ते न्नए सहु झोय राइा सिरियो जंधव ति-
 ए समय, पाभी नृप झादेशा थूलिलन्नने
 तेऽवा, झाव्यो मंदिर वेश राजा हुडीगत ते
 हुनी सांलखी, थूलिलन्न इहे सुएणो नारि

આજાન્ને આપો તુમે, તો નઈ આવું એક
વાર ॥ ૧૮ ॥

રાઢાલ પહેલી રા સાસ્ત્ર પૂછેરે વહૂઅ-
રવાત, ભાલા કિંહાં છેરેા એ દેશી ॥ મને મ-
હારા આપના સમન્ને, જન્મા હું નહીં દેઉંરેા ॥
તુજથડી ઘડી એક, અલગી નહીં રહુંરે
॥ એ આંડાણી ॥ નંદરાયને આવશો પો-
તે, વાલા મહારા તેહને ઉત્તર એમે દેશુંરે
॥ મીઠડા મહારા જે ઝરમાવશો, તે ભાયે ઘ-
ઢવીને દેશુંરે ॥ જન્મા ॥ પાશા મને ॥ તુમા ॥
પાડલી પુરની શેરીયે લભતાં, વાલા મહારા
રલયિંતામણિ, લાધુંરે ॥ જન્મા પુરષમે તુજ
ને દીઠે, તુમશું હી દંડું બાંધ્યુંરે ॥ જન્મા ॥
રા સહેજે તાહારી થૂડું પડે બિહાં, વા ॥
તિહાં હુંલો હી રેડૂંરે ॥ પ્રાણલ્લવન લ્લ પાછું
વાલો, શ્રીનંદરાયનું તેડૂંરે ॥ જન્મા ॥ ૩ ॥

जांते उरीने भुंदुं जमशुं, वा०॥ पण नहीं
 भेलुं छेडुं रो॥ अम् उरतां ज्ञे पीछि तुमे यालो,
 तो मुबने साधे तेझोरे॥ बनवा०॥ इल उ-
 रीने थूलिलन्द त्यांथी, वा०॥ आव्या मन् अ-
 एंद्रेरे॥ लूपने लेटी संयम लेशो, उद्यरत-
 न पाय वंदेरे॥ बनवा०॥ प ॥

॥ दोहा॥ थूलिलन्द उहे सुणो लूपति,
 किम भास्यो मुब तात॥ मुबने तेहुं मोडल्युं,
 ते लांझो अवहात॥ १॥ लूपउहे थूलिल-
 ने, वांड नहीं मुब उये॥ पंडित अँड हे-
 शांतरी, मुब लएरी आव्यो सोय॥ २॥ उविन-
 त डव्य महारा उद्या, ओलंग डीधी सार
 ॥ तव तूडे हुं तेहने, दीधा लाख देनार॥
 ३॥ मेंता लएरी में मोडल्यो, सेवा लाख
 पसाय॥ लोनन लज्जि लखी उरी, पण
 नहीं-दव्य देवाय॥ ४॥ दिन दश पांच वो-

ली गया, उहे पंडित शक्तिलाला आपो मु-
 ज्ञने हवे तुमे, ले तू हो लूपाल ॥५॥ मेरे
 तो उहे अमें आपशुं, न क्य सहीत अध-
 लाख ॥ पंडित उहे पूरो लेऊं, ईश्यो वन्य-
 न मत लाख ॥६॥ हाना उसना तेहुने, री-
 शरणी थूलिलस्त ॥७॥ हठ वढ वाड हूँ औ ध-
 लुं, पंडित होये क्षुर्सा जा तेणे उठे हूँ
 उरी, आवी उही मुज वात ॥८॥ मेरे नवी बनेयुं
 हूँ भती, ले उरओ तन घात ॥९॥ नंदराय
 बनें नहीं, ले शक्तिल उरेह ॥१०॥ नंदराय भ-
 री उरी, सिरियो पाठ ठवेह ॥११॥ पंडित
 नाशिने गयो, मेरे ली महारो देश ॥१२॥ राज्य
 यत्क्षुं ब्नेधिये, विष मेरते किशो नरेश
 ॥१३॥ तव मेरे सिरियाने उर्द्यु, सीयो उम
 शिरद्धर ॥ आज पछी वत्स ताहेरी, डोई
 न दोषे उर ॥१४॥ वली सिरिये मुज्जने,

उहुं, थूलिलद्वय महारो ल्वात रा ते बेडां हुं
 किम ग्रहुं, सुएो नदराय अवदात ॥१२॥
 ते भाटे तुलने इहुं, त्यो उम शिरदार रा हुं-
 डाकुर प्रब्ल तएो, तुं लीला लहुर लंडरा
 १३ रा ते सांलखी थूलिलद्वय इहुं, सुएो हो
 श्रीनंदराय ॥ आवुं आलोयी हवे, ग्रहुं उम
 सुजराय ॥ १४॥ राज सलाधी उडीने, आ-
 वे मंदिर न्यम प्रभारगमां मुनिवर भव्या, सं-
 लूपि विलय ईणे नाम ॥ १५ ॥ त्रण प्रदक्षि-
 णा हेईने, करी आलोय वियार रा थूलिल-
 द्वय गुडने वीनवे, संयम द्यो सुजडर ॥ १६॥
 गुड वियारे पित्तमां, हुलुआ इमीच्छेह ॥
 वसी प्राणी प्रतिजोधवा, थूलिलद्वय गुणनो
 गेह ॥ १७॥ योऽय लुव न्यणी करी, गुड-
 हे लसें आष ॥ रमाज्ञा लेई दुटुनी, सा-
 धो वंछित डाष ॥ १८ ॥ घरे आवी सिरि-

या तएरी, लेर्ह अनुभवि सार ॥ गुरु पासें
 आवी उरी, लीधुं संयम भार ॥ १८॥ इरी आ
 व्याराज्ञ उने, ज्वेर्ह सहु विस्मय थाय ॥
 यूलिलन्दने राज्ञ उहे, आते शुं उहेवाय
 ॥ २०॥ तव यूलिलन्द उहे सुणो, लोडे उही
 के वात ॥ नंदराय भारी उरी, सिरियो डेश-
 से पाट ॥ २१॥ ते अवदात सुणी तमे, रोष
 लराणा राय ॥ भुज पिताने भरवुं पड़युं, जी
 धो अहु उपाय ॥ २२॥ राज्ञ मिन्न नडोर्ह
 नो, बोले ईम संसार ॥ आदोयीमें अे
 लदो, लीधो संयम भार ॥ २३॥ ईमि उही-
 ने यूलिलन्दज्ञ, आव्या गुरुने पास ॥ सिरि-
 याने सहुयें भली, डीधो मंत्री आस ॥ २४॥
 हवे कामिनी डेश्या तिहां, ज्वेवे वालिम वा-
 ट ॥ यूलिलन्द सजी आव्या नहीं, सूनी
 हिंडेला आट ॥ २५॥ रे सजी उठ उताव-

ली, सबु शोल शएणार ॥ घेरें विलपती
 सुंदरी, डों छोडी निरवार ॥ २६ ॥ यार घडी
 नी अवधि उरी, आव्यो आशाढो भास ॥
 डामणगारो उंतबु, सजी नाव्यो आबह ग्या-
 वास ॥ २७ ॥ ते डोडी उतावली, वालिम न्जे-
 वा आप ॥ दीपविनय ईभि वीनवे, हुवे डो-
 रया डेर विलाप ॥ २८ ॥

आदाल जीबु ॥ देशी पूर्वली ॥ आव्यो
 आशाढो भास, नाव्यो धूतारोरे ॥ मुने न्जे-
 यो विरहु लुञ्जंग, डोई उतारोरे ॥ अे झां-
 उणी ॥ वियोग तणु विष आप्युं सघले, वाण
 भाहरी इलसी देहडी दाधीरे ॥ शङ्कालना
 सुत पाजे जीने, नहीं डोई मंत्रनो वाहीरे
 ॥ नाव्योण ॥ १ ॥ अे हुनां ठैहेरनी गति अने-
 री, वाण ॥ भाने नहीं मंत्रने भुहुरोरे ॥ अे के
 वातनो अंत न आवे, हुः अपण आपे हुहुरो

रे॥नाव्योग॥२॥ जरभर जरभर मे हुलो व-
 रसे, वा०॥ अलहुल अलडा वालेरे ॥ जापै-
 जो पीजि पीजि पोडारे, तिम तिम दिलुं दा-
 लेरे॥नाव्योग॥३॥ वैरीनी परे खे वरसालो
 मुने, जावीने सागो झाडोरे ॥ तन मन तलपे
 मलवा माटे, डोई मने पीजिते हेजाडेरे॥ना-
 व्यो॥४॥ इषि अवसरे श्रीगुर आदेश, वा०
 ॥थूलिलन्द योमासुं जाव्योरे ॥ जीद्य रतन
 उहे कोशयारंगे, मोतीयउ वधाव्योरे॥नाव्यो॥
 ॥उकोशयाने व्याप्यो विरह लुर्यंग डोई जीतारो
 रे॥पा॥

॥दोहा॥ इषि अवसर श्रीगुर तपो,
 लर्ज आदेश जीदार ॥ योमासुं रहेवा लएरी
 श्रीथूलिलन्द अणागार ॥१॥ इर्यि समिति
 शोधता, हलवा धरता पाय ॥ जाल पणानी
 पृष्ठमएरी, थूलिलन्द मनावा नय ॥२॥ वज्ज

कुछोटो दृढ़ करी, हवे थूलिलन्द मुण्डिंद ॥
 डेश्या मंदिर दूड़ग, आव्या मन आणंद ॥
 ३ ॥ तव हासी उतावली, दीध वधार्द डेश
 ॥ वालम आव्यो विरहुए, मधरीस मन
 अंदोस ॥ ४ ॥ तव उठी सासुंदरी, पीडिने
 मलवा ऊज ॥ यातुड निम येतुर हुर्द, ते
 उल्ली उरी लाज ॥ पा सुणो स्वामी ते मुल
 लए, छटकी दीधो छेह ॥ यार घडी मुजने
 उही, पीडि अवरां डीध स्नेह ॥ ५ ॥ इस
 तणो लेम तापणो, लेहवो संध्यावान ॥ ६ ॥
 र तणो त्रेहडे बिशो, तिम नाणर मित्रनो-
 मान ॥ ७ ॥ भेहणा हेती माननी, मधुरां जो-
 दे वेण ॥ आज सझल घर आंगणो, आज
 सझल दिन रयण ॥ ८ ॥ भोतीयथाल व-
 धावीने, डेश्या उरे अरदास ॥ पूरव प्रीत
 संलारीये, उरीये लील विकास ॥ ९ ॥ मोहे-

लें भावो भोहुना, जालिहरी तुमवेस ॥१५॥
 रमुणी ऋषीने उहे, मंदिर ऊरो प्रवेश ॥१६॥
 धन्य दिवस धडी आजनी, धन्य धन्य मुज
 अवतार ॥ वालभ मुज धरे आविया, सझल
 उझ संसार ॥१७॥ पूरबली भाया थडी, थू-
 लिल-उवन प्राण ॥ पत्नेषे दीप डेशया
 उहे, पीजि तुमे धर मंडण ॥१८॥

॥ ढाल त्रीलु ॥ पूर्वली देशी ॥ महाराम-
 नभां लागे भीठोरे, दाहुडो आज्ञनोरे ॥ हुं
 पामी पुएय संयोग, भेलो महाराज नोरे ॥ अ-
 भांडेएरी ॥ प्राणनाथनं पगलां थातां, वा० ॥
 माहाइ अांणएुं नायेवा लाणुंरे ॥ हर्षहुंया
 मांहे न समाघे, वजत अंबर लर्छ वाणुंरे ॥
 हा० ॥१९॥ झुल देवीये उझाए ऊधी, वा० ॥
 भोतीयडे भेह वूठोरे ॥ झाज भाहरे अांण-
 ए ॥ अांजो भोख्ये, पुएये पूर्वज तूठोरे ॥२०॥

पाशा मंदिर हसीने साहुमुं आवे, वाणाख्ये
 साच्युडे सोंहणुरे ॥ आलशुने घरण्णा अ-
 वी, सुजनुं नहीं उंर्धिएं रे ॥ दाना ता यार
 घडीनी अवध ऊरीने, वाणा याल्यां यितडुये-
 रीरे ॥ भनथी मुलने वीसारी मेहेली, डोए
 भनावे गोरीरे ॥ दाना ज्ञा उंबरे अवी शुं
 उत्ताछो, वाणा मंदिर पावन ऊबेरे ॥ दासी
 तुमारी अरब ऊरे छे, मुजरो भानी लीजेरे
 ॥ दाना प ॥ उठ हाथ तुं अलगी रहीने, वाण
 ॥ भन भाने तेम करबेरे ॥ धप भप भाद्यने
 धमऊरे, इूढीनी परे इरबेरे ॥ दाना ॥ ६ ॥
 छम परठीने रह्या योमासुं, वाणा उद्यरतन
 छम भांजेरे ॥ नित्य नित्य माहारी वंदना
 होने, ले मन दृढ ऊरी राजेरे ॥ दाना ॥
 ॥ दोहा ॥ थूलिल-८ ऊहे सुष सुद्दी,
 में वश झीया नयण ॥ तुं व्याकुल थर्छि-

रहएरी, तिम त्वांजे ईमि वयए॥१॥ उहेऊहे
 शया सुए पीडिला, तु मुल लवन प्राए॥२॥
 प्रीत नले हवे सींधीयें, वली वाधे तन वान
 ॥३॥ थूलिल-उहेऊहे जेशया सुणो, अमें नि-
 रसोली साध ॥ रहीशु योमासु तुम घरे, पण
 मनमें निराजाध ॥४॥ जेशया उहेऊहे तुम वयए
 ए, हुं जखिहारी न्वां॥ महोल पद्धारो मोहु-
 ना, जिम पूरए सुषं पां॥ ४॥ थूलिल-उ-
 जेशयाने उहेऊहे, साडा ब्रएब्ल हाथ ॥ मुलथी अ-
 लगी तुं रहे, मृग चाघएस्यो साथ ॥५॥ वा-
 घएरी नहींरे वल्लहु, हुं छुं अबला जाल
 ॥६॥ अबलायें सबला सांउल्यां, हुरगति
 नी दतार ॥ सिंहिएरी लय अेउब्ल लवे, ल-
 व लव तुब लय नार ॥७॥ थूलिल-उहेऊहे
 तव ईमि उहेऊहे, सुए जेशया मुल वात ॥८॥

भहुव्रत में लीया, भ उरीश माहूरी वात ॥
 दा ऊश्या उहे इणी मंदिरे, आवी रहो योमा-
 स ॥ थूलिलन्ति हां जाव्या वही, मंदिर घरी
 उखास ॥ एा लाव लज्जि निय प्रत्यें उरे,
 वसी लोकन सरस तंजोक्त रामधुर वर्येन मुजः
 थी उहे, पीयु उरो रंगरोक ॥ १० ॥ मुहु भयडोडी
 ने उहे, ऊश्या मुजथी वाण ॥ जालपणानी व-
 द्वतही, मुजथी अतीव भताए ॥ ११ ॥ विषा
 पूछे व्रत भाईयो, वालेसर गुणवंत रायोगा-
 रंल छोडी उरी, रंगे रमो अजांत ॥ १२ ॥ हुं दा-
 सी प्रलु तुमनए, पगरब रेणु समान ॥ हु-
 वे अंतर डिम दाखयो, काया उँ दुर्जान ॥
 १३ ॥ अंतर तिहां डिम डीब्बयें, बिहां मन
 मेख्यां होय ॥ हिपविन्दय उहे आवीने, अंत-
 र न उरो ऊय ॥ १४ ॥
 ॥ दाल योथी ॥ पूर्वली देशी ॥ अभेयो

अतु मारो न एथोरे, मेहेलोने आंटोरे ॥ मने
 खट्टे उलब्ज भांहे, प्रेमनो डांटोरे ॥ अे अंड
 ए ॥ योगी होय ते बंगल सेवे, तो रहे योग
 नुं पाणीरे ॥ अम घर आवी योग बलवसो,
 योगनी भुक्ता भें जारीरे ॥ मेहेलोने ॥ १ ॥ इम
 कठे मङ्क पाय विछुया इमडे, रमज्जम घूघरा
 वाक्षेरे ॥ बंजरना लमउरा भांहे, व्रत तमां
 लांडेरे ॥ भेण ॥ २ ॥ अड योभासुं अनेचिनशा
 ली, त्रीने मेहुलो टब टब यूअरे ॥ आंजडीना
 ओलाला भांहे, मुनि पए सामुं ज्ञूअरे ॥ भेणा
 ३ ॥ धपभप माद्दलनें धीड़ारे, वागा थै थै नाट-
 क छंडेरे ॥ मुजडाना मरउलडा भांहे, उहो के-
 ण न पडे इहेरे ॥ भेणा छा अहवा वयण सुएरी
 डेश्यानंपावागाथ्युलिलन् उहु सुएरा लालारेआ
 ना नानाहुवे हुं नवि थूं दुं, हेझी ताहाराया-
 लारे ॥ भेण ॥ ४ ॥ अध्यरतन उहे ते मुनिष-

रनां ॥ प्रेमे वं हुं पायारे ॥ मनथी ब्लेणे उ-
 तारी भेली, आर वर्धनी भायारे ॥ भेना ॥ ४॥
 पादोहा ॥ वयण सुएरी वालिम तणा, घ-
 रती डोश्या हुः जा ॥ हवे हुं पीयुने वश ऊँ, ब्ले-
 म पामुं बहु सुज ॥ १॥ क्षधि घएरी घर मा-
 हे, डोण तेहनो रजवाल ॥ नागर ऊत क्षषी
 थयो, हुं सधु अजला जाल ॥ २॥ सुए हो प्री-
 तम ऊत ल, अवगुण विण सही नार ॥ मुज
 सरणी नहीं सुंधरी, थूलिल-र हीये वियार ॥
 ३॥ अम अगल सुए साहेजा, ठंड सरि-
 जा ब्लेहु ॥ हुरि हर ब्लना ते सवे, अमथी शं-
 डे तेहा ज्ञा ते माटे तुमने ऊहुं, मानो पीछि-
 ल वात ॥ नहीं तर प्राए त्यज्ञुं हवे, सात्यीड
 हुं अवद्धत ॥ ४॥ थूलिल-र ऊहुं डोश्या सु-
 एो, हुं नवी छुं योग ॥ भेविसारी तुल ल-
 एरी, सभतासुं संयोग ॥ ५॥ तव डोश्या मन

यिंतवे, नाटक झरीयें अडा हावलाव हे-
 खाइसु, सल शोदे सुविवेदाणा सजी ह
 शवीश लेली उरी, नाटक मांडयो साराई
 प उहे ऊश्या त्रीया, सहियरमां शिरदार-
 राठास पांयभी ॥ देशी पूर्वली ॥ मांडयो
 नाटरंल, महारंग वरसेरे ॥ भेहसुं मांडयो
 वाई, माननी तरसेरे ॥ अे अंडणी ॥ गणन
 मंडलमां उंडो गाळे, वाणा महोलमां मांड-
 ल वालेरे ॥ यित्रशालीमां वीणा वाले, भोर
 लवे गिरिकुंबेरे ॥ महारंगणा ॥ पीडी पी-
 डी पीडी चातड जोखे, वाणा टहु टहु कोय-
 ल टहुडेरे ॥ धुधरडीना धमडारामा, ताथे
 तान नऱ्यूडेरे ॥ महाणार ॥ जलहसुडने-
 ब्लव लबूडे, वाणा तेतो लल जालाने ल-
 ऐरे ॥ पाहानीहु लाल ममोला लेहवा, हरिया
 शालु अति दीपेरे ॥ महाणाडा प्रेमतएरो

रस न्यूका लाभ्यो, वाणा रंगना याध्या रेखारे
 रालपसी पउवा क्षेहुं थयुं, वाध्या मनोरथ वे-
 लारे॥ महा०॥ जोड़ डोडी रोमराय उत्स-
 स्तीयां, ज्ञालिम डीध्यो न्नेरोरे॥ बलमां ऊमलरन
 हि लेम डोरो, तिम धूलिलन्ट रह्यो डोरोरे॥ म-
 हाणा पा॥ लली लली इूदी लेती ज्ञामे, वाणा
 आडी नलरे हेरीरे॥ जिद्यरतन उहे धन्य मु-
 निवरने, ले न ज्ञामे पाषु ईरीरे॥ महारंग०॥

रादोहा॥ केठिविध नारकहेजीने, धूलिलन-
 स न उयो मन्न॥ विषयवि उंभित विरहिए॥
 उंतुं पछाडे तन्न॥ ज्ञालिम में मनवश उ-
 थ्यो, पांचे ग्रही शुलदृ॥ अड़ेक मना थष्ठ उ-
 मिनी, कोध डीथो दहवदृ॥ रा सांलली ता-
 रा जोखड, हुं नवी चूँ नार॥ धीरपणु में
 ज्ञाधरयुं, योवन अधिर संसार॥ ता ज्ञवडृ-
 पी तुं मोहनी, साधुने विषवेल॥ ईमि ज्ञए॥

भे परिहरी, हवे संयमयी भन मेल॥ राजानं-
 दिष्टेण सरिजा बहती, आषाढादि इ लेहु ॥ भोग
 हु महालट वश उरी, भुजित गथा क्रषी तेहु ॥
 पाठांची झूपी उत्यनी, पीपुल पान समान ॥
 याथिर पणु छवित तणु, लेहुवो संध्यावान ॥
 ६॥ उत्या उत्या उभिनी, माया भोहनी जला ॥
 वली वली शुं उहु नायउ, विषय एउ भन वा-
 साऊ ॥ ते भाटे उत्या तमे, भक्तो आल पंपाल
 ॥ ईप उहे धूलिलस्तु क्रषी, वयण उहे ततुलख
 राढाल छट्टी॥ पूर्वली देशी॥ तुं शाने डरे
 छे यासारे, हुं नवि धूडुरे ॥ भुने वाली लागे
 छे भासारे, ध्यान न भूडुरे ॥ अे आँडणी ॥
 शील साथे भें उदी सुगाई, भें तो भेली जीछु
 भायारे ॥ ज्ञानिम भयणने लेर उरीने, छुत
 नीशान वज्ञयारे ॥ हुं॥ ७॥ वबु उछोटो भें
 वाल्यो सूधो, ताहारो छोड्यो नहीं छूटेरे ॥

ने मंजरी घणुं अडलाये, तो सापें छीझूं न
 चूटेरे ॥ हुं०॥ रा शशीहर ने अंगारा वरसे,
 वाणा समुद्र मर्यादा भूतेरे ॥ पवने ने उनका-
 ये दउते, नक्षत्र मारग चूडेरे ॥ हुं०॥ उ ॥ तो
 पण हुं ताहोरे वश नावुं, वाणा सुंदरी मानबे
 साम्युरे ॥ राईनो पाउते वर्धियो राते, हुवे न-
 थी भनडु उम्युरे ॥ हुं०॥ भासो जालड ने सा-
 भट रोवे, वाणा पावर्धये नये पानुरे ॥ ईकट
 शया पाजिंड उरे छे, लागे नहीं सुने तानोरे ॥ हुं०
 ॥ य ॥ निए मुनिवरे वेवडी डोश्याने, वाणा
 पगनी भोजडी तोदेंरे ॥ तेहुने माहारी वंदना
 होने, ऊध्यरतन ईमि जोखेरे ॥ हुं०॥ इ ॥

॥ होहा ॥ नागरी नातिनो लाहलो, श्री
 धूलिलस्तु अणगार ॥ डोश्या वयणथी नवि उ-
 ग्यो, समता यर्ह तेणी वार ॥ १ ॥ भन वरे उ-
 या वश उया, हु सुंदरी सुए वात ॥ डिशो

आँडबर तु उरे, इर इर कहु विज्याता॥२॥
 निभ मांजरी भूषण, लिभ भोरने नाग॥३॥ लि
 भ चयीने जान वली, मृग रीपु लिभ वाध॥४॥ अ
 तिभ त्रीयने ऋषी तणो, ब्लेय पटंतर ऊरेश॥५॥
 पण हूं तुक्ष प्रति जोधवा, वली थावा निरहोष
 ॥६॥ वयण सुखी वनिता उहे, लखे आव्या
 भुज नाथ॥७॥ जान सइल दिन भाहरो, तुल मु-
 ल शिवपुर साथ॥८॥ पा भोहुवरें वली विरहि-
 एी, उत्सुक धर्द उज्जाल॥९॥ उहे विरहो प्रलु-
 तुभ तणो, हुं न जमुं झेड ताल॥१०॥ व्याङ-
 स ज्ञानी विरहिएी, ऋषी नवि जोखे वयण
 ॥११॥ उडे पडीते डामिनी, नाजे तीआ नयण॥१२॥
 आप्राण छवन डिम परिहरो, जार वरसनी
 प्रीत॥१३॥ हुं दुःख सायरमां पडी, द्यान जाणो
 यित॥१४॥ टावलती ऊडी नायड, पुनः प्रारंले
 तेहु॥१५॥ नाटक भाँडयो युज्जितशुं, दीप उहे धरी

नेहु ॥८॥

राढालसातमी॥ पूर्वली देशी॥ सांल-
 ली ताहारा वयण, थर्ड हूँ गहे लीरे॥ मुनेशा-
 ले हीयडां मांहे, भीतडी पेलीरे॥ अे झाँडणी
 ॥ जारवरसनी भ्रीत ले बांधी, वाणा बापे-
 ना जोल ले जोल्यारे॥ जोल उखा ले लम-
 ए हाथें, ते डिम बये मेल्यारे॥ थर्डगारा अध-
 घडी ज्वे अलगी रहेती, ताहारा मनमां हुः ज़ुँ
 थातुरे॥ अंजडीये झाँचूड जरतां, जोली बू-
 झों ते जातुरे॥ थर्डगारा अड दिवसमें रीस
 उरीने, वाणा तुमशुं कीधी माठीरे॥ जाहु ज्व-
 लीने मनावी मुलने, ते वेला डिहां नाठीरे॥ थ-
 र्डगाउ॥ पहेलां मुलने लाउ लडवी, वाण॥
 मेझने भाथे यडवीरे॥ मूलमांथी उज्जेऽतां तु-
 लने, मनमां महुरन आवीरे॥ थर्डगारा॥
 नागर सहबे निर्दयी होवे, वाणा मुजयी जेज

ਦੇ ਮੀਠੁਰੇ ॥ ਝਲਕਨ ਮਾਂਹੇਥੀ ਊਪ੍ਰਤ ਨ ਛੱਡੇ, ਤੇ
ਮੈਂ ਨ ਜ਼ਰੋਂ ਵਿਠੁਰੇ ॥ ਥਈਗਾ ਧਾ ਯੇਹਵਾ ਉਲਕ-
ਭਾ ਜਾਨੇ ਸੁਏਣੀਨੇ, ਵਾਂਪ ਮੁਨਿਧੇ ਮਨ ਨ ਤਗਾ-
ਯੋਰੇ ॥ ਉਦਿਧਰਤਨ ਤਹੇ ਘੰਨ੍ਯ ਲਾਛਲਦੇ, ਨਿਏ
ਤੁਂ ਥੂਲਿਲਨ੍ਦ ਜਧੋਰੇ ॥ ਥਈਗਾ ਹੁ ॥

ਹੁਦੇਹਾ ॥ ਉਲਕਲਾ ਨਾਰੀ ਤਣਾ, ਸਾਂਲਦੀ
ਧਾ ਅਕਾਏਹੁ ॥ ਅੀ ਥੂਲਿਲਨ੍ਦ ਜੋਖਾ ਲਏਣੀ, ਸਾ-
ਹੁਸੋ ਦੇ ਉਪੇਦੇਸ਼ ॥ ੧ ॥ ਰੇ ਤੋਖਾਙਾ ਵਿਰਹਣੀ,
ਬਾਂਧੇ ਮਾਧਾ ਜਲ ॥ ਯੇ ਕਿੰਪਾਤ ਇਲ ਸਾਰਿਜਾ,
ਕਾਣ ਨ ਰਹੇ ਯੇਤ ਤਾਲ ॥ ੨ ॥ ਸੁਜ ਛਿਏ ਲੁ-
ਕੇ ਅਨੁਲਵਧਾ, ਲਕਾ ਅਨੁਤੀ ਵਾਰ ॥ ਨ੃ਸਿ ਨ
ਪਾਸਾਂ ਲੁਵਤੇ, ਤੋਖਾ ਯੇਹ ਵਿਧਾਰ ॥ ਤਾਹੁ-
ਕੇ ਸਾਂਕਰ ਆਏ ਮਨੇ, ਨਿਮ ਹੋਥ ਕਾਂਧਿਤ ਆ-
ਸਾ ॥ ਸਾਂਧ ਮਲਈ ਸੁਜਤੇ ਨਈ, ਤਰਿਧੇਂ ਲੀਲਕਿ
ਖਾਸ ॥ ੩ ॥ ਨਿਸੁਏਣੀਨੇ ਕੁਝੇ ਨਾਧਿਕਾ
ਮੀਠੀ ਵਾਲਮ ਵਾਤ ॥ ਤੁਮ ਯੁਣ ਤੇਰੀ ਧਾਤੁਝੀ,

घोसुं उहीय नज्जता॥ परा पणस
 नारीने, आदृ द्यो अेकवरा॥ स
 ऊतरे, हुं व्रत लघिश बारा॥
 व्या मुनि, रेरे जोश्या बूला॥
 छोड़ी है, सांलख उहुं छु तुन
 यमनो आडरो, में लीधो सुण
 रथा उहे सांलखो, ऊं छोडो॥
 दोष अनंतो नायडा, तुन ऐ
 पविलय उहे सांलखो, थूलि
 राढाल आठमी॥ देशी
 एरी संयम नारीरे, तुन ने वी
 माथानी भली तेहु, डामण
 उही॥ तेणे मुने आडरि
 न मेसे पासोरे॥ ऊंट हाथ
 नापे वारो ने वासोरे
 सावो मेसतां तेणे॥

(६२)

લ શયો બનેરો તાહારો, હવે બેસી
તીરે॥ તુજનારા ચિહું પાસેં યો-
, તેને હાથે છે તાલું કુચીરે॥ ઘ-
ડે હવે તાહારો, જે થાયે ઊંચીને
૩૦॥ ૩॥ મુહુપતી માલાને વલી
મહનિશિ રહે મુજ તીરેરે॥ એ
છે તેહુના, તે તુજને ડિમ ધીરે
પાંચિની સાંજે તે પરણીછે,
ન માનીરે॥ આખર તાહારો
તે માટે રહે છાનીરે॥ તુજ૦
બધી વાત ઉંઝને, તો ચઢે
તરવારની ધારા ઉપર રાખે,
લટકેરે॥ તું॥ ૬॥ યોર
ગોહોંયે, વાં॥ નિહંલ-
ણી જે વારેં જણીને
એ લાગેરે॥ તું॥

॥ औरा अेरुवा वयण सुएरी मुनिवरना,
 ॥ झोश्यासमजित पामीरे ॥ जे उरब्जेडी वंडी
 तेहुने, उद्यरतन शिरनामीरे ॥ तुणा ॥
 ॥ रादेहा ॥ झोश्यायें समजित पामीयो, थू-
 लिल-इ प्रीतम पास राखावै सइस दिन माहु-
 रो, धन्य यित्रशालि आवाश ॥ १ ॥ इणे मोहो-
 लें सुज लोगव्या, ईरु तएरी परे लेमा इणे
 मोहोले वली ब्रत लीया, हवे नवाद्यु तेम ॥ २
 ॥ तेमाटे नमे इहां रहो, थूलिल-इ क्षषीराय
 ॥ उहे थूलिल-इ झोश्या सुएरो, अमे न्नसुं गुझ
 पाय ॥ ३ ॥ हवे योमासुं जितरे, मुल गुझ न्नेवे
 वाट ॥ अे ब्रत झूडो पालने, भधरीश मन उ-
 धाट ॥ झाशी ज्ञामए दीधी लली, झोश्याने
 तेएरी वार ॥ तव वनिता इभि वीनवे, धन्य धन्य
 तुम अवतार ॥ पा भें लीपाय डीधा घणा, तु-
 मने थूउववा स्वाम ॥ अमने मुल अपराधने,

उहुं छुं हुं शिर नाम ॥ १ ॥ यातो ईमि हुं डि-
 म उहुं, पौहोंचे वंछित आश ॥ वहेला वली
 ईहां आवन्ने, वीसरसो नहीं स्वास ॥ जाहु-
 रजित आंशु नाजती, विउसित बोले वयए ॥
 युझ वांदी प्रलु आवन्ने, महाराघर्मस्नेही स
 यए ॥ ठा उहे थूलिलन्द तुमे आवन्ने, मु-
 डित महेलनी मांहे ॥ नन्म नरा नहीं तिहांड-
 ई, रमशुं मन उधांहि ॥ छा मोती थाल व-
 धावीने, डोश्या दीध आदेश ॥ मुनिवर रजे
 वीसरता, जलिहारी तुम वेश ॥ १० ॥ थूलिलन्द
 न तिहांथी चालिया, उरता शुध्य विहार ॥ न-
 ई वांद्या निज युझ लएी, उहे दुङ्गर दुङ्गर डर
 ॥ ११ ॥ श्रीयुझ थूलिलन्द ने उहे, तुं नग सायो
 सिंह ॥ डोश्याने प्रति बोधतां, ते राजी नग
 लीहु ॥ १२ ॥ योराशी योवीशीयें, अलंग रह्यो
 तुन नाम ॥ डोश्या वयएथी नविय द्व्यो, थूलि

खट तु युए थाम ॥ १३ ॥

राढाल नवभी ॥ सोहेलानी राग धन्या-
श्री मेवाडे ॥ पामीते प्रतिजोध, योथुरे योथुं
रे व्रत योषुं वली उप्परे रे ॥ समर्कि त मूलश्रन्-
त जार, डोश्यारे डोश्यारे मुक्तिकर वस्यने च्छा-
द्दरे रे ॥ १ ॥ धन्य लाईकह मात, धन्यरे धन्य
रे ताहुरा शुडाल तातने रे ॥ धन्य धन्य गो
तम गोत्र, धन्य धन्यरे नागर नातने रे ॥ २ ॥
धन्य धन्य यक्षा बहिन, धन्य धन्यरे सिद्धिया
ल्लातने रे ॥ धैर्यपणाने धन्य, लगभारे धन्य
धन्य तुल अवदातने रे ॥ ३ ॥ संलूति विन-
य गुइ धन्य, ने यो ने योरे धर्मायार्य
ताहरोरे ॥ धन्य धन्य जे यित्रशाली, ज्ञेतां
ज्ञेतांरे धन्य लज्जागे लालरोरे ॥ ४ ॥ ने पा-
मी हुं तुलशुं श्रीह, ज्ञेयोरे ज्ञेयोरे भुल
भुलने जिणरीरे ॥ जाहे लखा माटे, मुक-

नेरे मुन्नेरे वाला तें निर्मल उसीरे ॥ पा ॥ ऊ-
 श्या सुं उरी शीष, तिहांथीरे तिहांथीरे मुनि
 विहार ऊरे हवेरे ॥ पोहोता श्रीयुझ पास दुष्करे, दु
 ष्करे इरी इरी युझ मुज्जथी स्तवेरे ॥ इ ॥ नाम
 राज्युं बगमाहे, नेणेरे नेणेरे योरारी यो-
 वीशी खण्डे ॥ धन्य धन्य ते नस्नार, मनथी
 रे मनथीरे विषय थडी वे ऊलगेरे ॥ छास-
 तरशें ओगएशाठ, भागशिर मागपशिरे शु
 दि भोन घेडाईशीरे ॥ शीखतए ॥ युए घेह
 में गायारे में गायारे उनाऊभामां ऊल्ल-
 सीरे ॥ टा ॥ श्रीयूलिलन्द कृष्णराय, गातांरे
 गातांरे भुह माग्या पाशा ढव्यारे ॥ ऊद्यस्त-
 तन ऊहे घेम, मननांरे मननांरे मनोरथ स-
 विवेग इव्यारे ॥ छा

राद्येहा ॥ यूलिलन्द ऊश्या गावतां, पो-
 होये वंछित भाशा ॥ धर धर ओष्ठव अ-

ति घण्टा, नित्य प्रत्येक लीला विद्याशत्ता ॥ अ-
हो शुणे ने सांलखे, लघे लभावे ब्रह्म ॥ इः अ-
मय ल सवि दूरे हरे, अबरामर लहु तेहु ॥ शा-
म्भु डीरति धूलिलन्दृतणी, गीद्यरतन नव-
दाल ॥ इहा दीपविजये कहा, लणतां मंगल
माल ॥ आ ॥ इति श्री धूलिलन्दृज्ञनो नव-
रसो संपूर्ण ॥ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथल्लनायोदीश ॥
दयोऽप्तरं लः ॥

॥ देहा ॥ समस्या हेवी शारदा, जहुली
आपे बुध्य ॥ नस शुण गाउं ने म जिन, स-
जल अक्षर दलशुध्य ॥ ॥ नीडो सोरी पु-
रनगर, समुद्रविजय नृप स्वाम ॥ दुंडे शि-
या अनेक हे, वजी शिवाहेवी नाम ॥ रास-

ਦਾ ਤੂਪਾ ਪੀਯੁ ਪਰਮ ਸੁਖ, ਤਨ ਮਨ ਘੇਉਣ
 ਵਾਸਿ ॥ ਲੋਣਤ ਤੇਤੀ ਲਮਰ ਜ਼ਿੰਦੁ, ਝੁਕੀ ਪਤੇ
 ਰਤੀ ਜਾਸ ॥ ਤਾਤ ਦਾ ਜੀਵਰ ਪ੍ਰਲੁ ਅਵਤਰਥਾ, ਛੁ-
 ਛਾ ਧਰ ਅਵਤਾਰ ॥ ਆਵਣਾਨੀ ਪੰਚਮੀ ਸ਼ੁਡਲ,
 ਜਨਮਿਆ ਨੇਮੀ ਕੁਮਾਰ ॥ ੪ ॥

ਰਾਫਾਲ ਸੁਏ ਗੋਵਾਲ ਏਹੀ ਗੋਰਸਤਾ ਵਾਲੀ
 ਰੇ, ਜਾਲੀ ਰਹੇਨੇ ॥ ਘੇਦੇਸੀ ਘੇਮਾਂ ਆਵੇਲਾ
 ਯਧਾ ਯੋਡਨੀ ਜ਼ਿੰਦੀ ਲੇਵੀ ॥

੧ ॥ ਯੋਡ ਪਹੇਲੁਂ ॥ ਪ੍ਰਲੁ ਜਨਮਥਧੋ, ਛਪੜ
 ਦਿਸਿ ਤੁਮਰੀਧੇਂ ਮਹੋਤਸਵ ਜੀਧੀ ॥ ਅਤੀ ਹਰ੍਷
 ਥਧੋ, ਯੋਸ਼ਠ ਸੁਰਪਤੀ ਲਾਲ ਸੁਲ ਮਦੀਲੀ
 ਧੋ ॥ ਅੰਕਣੀ ॥ ਤਿਹਾਂ ਮੇਡ ਸ਼ਿਖਰ ਪਰ
 ਲਈ ਜਵੇ, ਬਹੁ ਜੁਗਤੋਂ ਪ੍ਰਲੁਨੇ ਨਵਰਾਵੇ ॥ ਤਾਂ-
 ਟੁ ਸ਼ੁਧਿਆ ਲੂਧਣ ਪਹੇਰਾਵੇ ॥ ਪ੍ਰਲੁਣ ॥ ੪ ॥ ਝੂਰੀ
 ਆਏਹੀ ਸਾਤਾਨੇ ਆਪਿਆ ਛੇ, ਪ੍ਰਲੁ ਛਾਮੋਡਾਮੇ
 ਥਾਪਿਆ ਛੇ, ਸੁਰ ਲਜ਼ਿਸੁਧਰ ਸੋਨਾਪਿਆ ਛੇ॥

॥ પ્રાપ્તલુણારા કર્થી દાસી વધાર્થી હેવે છે, ઊરન્ભે
ડીનૃપને અમ કવે છે, તુમ પુત્ર થયો સુર સેવે છે
॥ પ્રાપ્તલુણારા સુણી સમુદ્રવિબય નૃપ હર-
જ્યા છે, પ્રલુ પૂરણ બ્રહ્મ તે પરજ્યા છે, ઊરે
અમૃત મેદુલા વરજ્યા છે ॥ પ્રાપ્તલુણારા

૨ ॥ રાયોડ જીબે રા નૃપ સમુદ્રવિબય, પુત્ર
લન્ધયા ડેઈ ડેઈ મહોલ્સવ મંગવે રા નીરાન વ-
બે, દશ દિવસ માંહેં સૂતક દૂરકરી છાંડે રાખે
અંડણી ॥ ડેઈ વાનિત્ર તાલ વળવે છે, ડેઈ
ગેહની મંગલ ગાવે છે, ડેઈ મોતીયાં સેંતી વ-
ધાવે છે ॥ નૃપણારા દશ દિવસેં દશોડણ ડી
ધાછે, દુનીયાને લોળન દીધાં છે, ત્રિહું લોડ
ના ઊરન સીધા છે રા નૃપણારા પ્રલુ દિન
દિન મોહોટા યાયે છે, પ્રલુ મેવા મોદક જાયે
છે, પ્રલુ ઠમક ઠમક પળ યાય છે ॥ નૃપણા
રા પ્રલુ બાલ અવસ્થા જેલે છે, પ્રલુ પણતો

અંબર લુલે છે, પ્રલુપગશું પરવત ડેલે છે॥
 નૃપો॥ રાખે મકરતાં યોવન આવ્યો છે, ત-
 ન બણે ઊંઘન તાવ્યો છે, પ્રલુપ યોગ અમૃત
 મન ભાવ્યો છે॥ નૃપો॥ ચા

3. પાયોડુ ત્રીલો॥ એક દિવસ વરો, નેમી
 કુમર નિન મિત્ર સંધાતે આવે॥ સહુ રંગ રસે,
 નવ નવ ડૈતુડ બેતાં આનંદ પાવે॥ એઝાં-
 કણી॥ તિહાં દ્વારિડા ન ગત્તી વાલાયેં, રયના
 ઉરી જનડ જાલાયેં, બિહાં આવે આયુધ શા-
 લાયેં॥ એક૦॥ પ્રલુપ ક્રને યાપ ગદા
 નિરખી, ઇરદી તેણે યહી આડખી, શાંખનાદ
 થી મિત્ર થયા હુરખી॥ એક૦॥ રા તેણે ના-
 દે બ્રહ્માંડ ઝૂટાછે, વલી હૃદય ગય બંધન તૂ-
 ટાછે, સુણી શ્રીપતીના પેગ ઘૂટાછે॥ એક૦
 ॥ તાં તિહાં તુરત લઈને પછતાવે, અતુલી
 જલ નેમણું સોહાવે, પણી અમૃત વયણે જો-

લાવો॥ અન્દોણ॥ જા॥

૪. રાલલે દ્યાડરી, રાન પર્યારચા ઘાન
તે ડાંદિક કેહુબું ॥ ઘાવો દિલ ભરી, રમીયેં -
મત ઘાપણ બદ છે કેહુબું ॥ અન્દોણાડી ॥
ઘાપણ શરીસુ કીડા પરિ હરિયેં, કહે રાન ની-
તિ છે તિમ કરીયેં, નિન લાજે લુન બદ વિ-
ઘરીયેં ॥ લલે ॥ રા તુમે કર પીતાં બર લંબા-
વો, તિમ ડીધો ટૃષ્ણો કર ડાવો, નિન વાસ્યો ને-
ત્ર પરેં ઘાવો ॥ લલે ॥ ર ॥ પ્રેલુ કર લંબા-
વો છટ કંતો, બહુ નેર કરે હરિ ઘટકંતો, કે-
મ કુપી સાખાયે લટકંતો ॥ લલે ॥ ડાઈમ
અલ પરણી પ્રેલુલ્લ વલીયા, કહે ઘમૃત હુ-
રિ સંશય પડિયા, બદલનું ને જઈ વેગે મલી-
યા ॥ લલે ॥ ર ॥

૫. રાહે હલઘરન્ન, હવે કેમ કરવું નેમિ પ-
રાક્રમ મહોદું ॥ મુન હિત કરણ, હેલામાં હું

हुरव्यो ते नहीं जोटुं ॥ अे भांडेणी ॥ शंख-
 यक गदा धनु अे धारी, आज वश ऊधा अे-
 ए निरधारी, मुन संपत्ति संघली संहारी, थ-
 ठ लेडे शजनो अधिकारी ॥ हे हण ॥ १ ॥ अे-
 भ सोय उरे शारंग पाणी, ईशो अवसरे गण-
 ने थर्द वाणी, पही दां नभी नाथे उही न ए ॥
 थठ अए परएया नेमी नाए ॥ हे हण ॥ २ ॥
 ईमि सुएनीने यतु लुन यित्त माहे, धणु षुसी
 ययो तो हे प्राहे, ते निश्चय करवाने याहे, ध-
 र पोहे तो रंगलर उछाहे ॥ हे हण ॥ ३ ॥ राणी
 इडमि ए अभुजने लाखी छे, ने लूधरे यित्त
 भां राखी छे, अे वातनी उखी साखी छे, ईमि व-
 यए अमृते लाखी छे ॥ हे हण ॥ ४ ॥

६. ॥ अे उद्दिवस हरि, अंते उर लर्द नेमी-
 सर संघाते ॥ अती हरजलरी, ब्रह्म कीउ ऊ-
 री गोपी नव नव लाते ॥ अे अंडेणी ॥ ५ ॥ अे-

ઈ सोवन शिंगी करधारी, लरी केशर पाएरी
 पियडारी, नेमल्लुने छांटे भतवाली ॥ अंडना ॥
 असजेसी साहेली मली साथे, डेई झूल हडाले-
 ई हाथे, लिनल्लुनी उपर ते नाखे ॥ अंडना
 ॥ २ ॥ डोई उभडयक्षे प्रेरे छे, डोई नथन त्रिलाल-
 गे हेरे छे, डोई लमुहु उजाए घेरे छे ॥ अंडना
 ॥ ३ ॥ डोई उभडलाने हेजावे छे, अति दुशलन-
 ना आप न लावे छे, डोई अमृतवयए हसावे
 छे ॥ अंडना ॥

५. ॥ हे हे वरल्ल, अम साथे हसी जोलो ल-
 ल्लन मेसी ॥ आ अवसरल्ल, हेत हीयानुं जो-
 लो रंगरस लेली ॥ अे जाऊणी ॥ अमे जन-
 एरी तुमारा हैयडानी, आ सघली मलीनी धिं-
 गानी, ते सार्पी धारो छोझानी, परएयावि-
 ए डिम थाये पोतानी ॥ हे हे ॥ १ ॥ ईम जां-
 गड जोली जोले छे, डोई आगल पाछल ते-

દે છે, મલીરધા ઇડિમિએરી ટોલે છે, બહુ જુગ-
તે પ્રલુને નોલે છે ॥ હેઠે ॥ રા તદનંતર નિ-
ન અવસર પામી, બલ ગ્રોધે છાંટે ગુણ ધામી,
કહે ગોવિંદ ગોપી શિરનામી, કુણ પોહેયે તુ-
મને કહો સ્વામી ॥ હેઠે ॥ ઉ ॥ સહુ બલ ક્રીડા
કરી નીસરીયા, પછી બલ કંઠે થામે ધરીયા, નન-
એ માનનીના મનજ હરીયા, કહે અમૃત લિન
વીંદી વલીયા ॥ હેઠે ॥ ઝ ॥

C. રા સહુ વેસ લરી, માનની મદની માતી
રંગ રંગીલી ॥ સિણગાર કરી, નવ નવ અંબર
લૂષ એ છેલ છબીલી ॥ જે આંદણી રા અણી
ઘાલી આંખડી ઘાલ છે, વલી ઘાડ ડેશર
ની તાલુ છે, સીયેં શીસ ફૂલે દેં માંલ છે, વ-
લી નીદવટ ટીસડી છાલુ છુ ॥ સહુ ॥

શિર વેણી અંબડે વાર્ડી છે, વલી સહુ સિણ-
ગારેં ઘાંડી છે, નને નડિત નડી સોનાડી છે,

રંગે રતી તંબોલેં છાડી છે ॥ સહુનારાયી-
ર યરણા યોવી પહેરી છે, બરી સાલ દુસાલેંચે-
હેરી છે, મહુકે જશબોઈ ઘેહેરી છે, મલી સહુસ
જન્મિશ ઈમિ લહેરી છે ॥ સહુનારા તિહાંબો-
લી અઠે પટરાએટી, તુમે સાંલલો દેવર યુણ
ખાએટી, અમે કું છું તુમારો હીત જાએટી, હ-
વે લાખે છે અમૃતવાણી ॥ સહુનારા

૮. ॥ ડહે ઇદ્ધિએટી, અમને શું કહાવો દીખ
થી લહોને ॥ અેડ પદમણી, પરણો નાણિં શયા
માટે અમને કહોને ॥ અે આંડાએટી ॥ અેડના-
રીનું શું પુરું ન પડે, નિરવાહ થડી કાયર લ-
થડે, તિમ રાઙ યેલે ઈમિ થયે અતડે ॥ કહેણ
ારા ન્યુઝો દ્વારિડા નાથની ઠકુરાઈ, ત્રિહું
ંંડના લૂપ નમે યાઈ, સમરથ છે અેહવો
તુમ લાઈ ॥ કહેણ ॥ નિએ સહુસ જન્મી-
શ ઉત્તમ વરણી, વલી સહુસ યોશાઈ ઉપ-

ર પરણી, ડાનુડે મહીપતીનો ધરણી, તે સાથે માણે છે ધરણી ॥ કહેનાં તો શું તમે જે
 કુયડી જણો, પણ બાવીશમાં નિન કહે વા-
 ઓ ॥ કહે અમૃત તિમ મુહગાથા ઓ ॥ કહેનાં
 ૧૦ ॥ એ લણે સત્યલામા, લારી થઈશું જે ઠ
 ને મ નગીના ॥ છો બાવીશમાં, નડુકુલના
 અધ્યારતે શિવાદેવીના ॥ જે આડણી ॥ તુમે
 સાંલસો વાત કરું ડાવી, જાગમભાં નિન મુ-
 ખથી ચાવી, ને આજ લગેં ચાલી અવી ॥ લ-
 ણે ॥ ૧ ॥ નિએ સઘલી સૃષ્ટી નીપાઈ છે, તે-
 એ વરણાવરણ થપાઈ છે, નેણે યુગલા નીતિ
 જપાઈ છે ॥ લણે ॥ ૨ ॥ તે ઋષેલ પ્રેલુ પ્રેલુ-
 તાપાઈ, બે ડન્યાંને પરણાઈ, સો જે ટાને
 જેટી બે અર્ધા ॥ લણે ॥ ૩ ॥ તે કિમ શિવ
 મંદિર નઈ વસીયા, તુમે ઉઠ્યા કોઈ નવાર-
 સીયા, શિવ વરખા અમૃત પદરસીયા ॥ લણે

११. રાહે છોગાલા, છેલ છબીસા છાંડો છો-
ઉર વાદી॥ હે અલબેલા, ઈમ નહીં શોલે યન-
દુકુદની એ ગાદી॥ એ આંડાએઠી॥ તુહે બંદુષ-
તી સુણો ડાંડુરીયા, સંસાર થડી તમે ઓસરીયા,
શું અમને લબ્નદો દેવરીયા॥ હે છોળા ॥ થયા
પૂર્વે તુમ વંસે સારા, હરિવંસ વિલૂષ્ણ સણગારા,
શ્રીમુનિસુભત પ્રલુદ્જ પ્યારા॥ હે છોળા ॥ નું
ઓ તેપેણ પહિલાં સંસારી, ઘણુ લોગવી રાજ
દિશાભારી, પછી આપ હૂઘા છે બ્રતધારી॥ હે
છોળા ॥ તે માટે મનની દાખોને, ને વાત હોયે
તે લાંઝોને, એ અમૃત સુષ્ણા ચાંઝોને॥ હે છોળ-
१२. રામાહારા વાહાલાલ્જ, જાલ પણ વલી
વધસે વીઠલ સાથે॥ સુણો લાલાલ્જ, લાંઝી
એ લાલ્જો લાહો હરીને હાથે॥ એ આંડાએઠી॥ રા-
યનહી રંગિલીરાએઠી, પાતલીયા પરણો ગુણ
અસ્થરી, પરણાવસે તુમ શારંગપાએઠી॥ માહા-

॥१०॥ अे क नारी विना नर नवी शोले, कुण
 आदृ मान दृथी थोले, वली परनारी ते हथी जो
 ले ॥ भाहुरा०॥२॥ नहीं केवल पुश्पने विस्तासें
 उपे सहु आव्याथी पासें, वली ऊँड लांडते डेहे
 वासे ॥ भाहुरा०॥३॥ ईमि सुसीभाराएी सम
 नवे, तुमे भानो विनती आदावे, लिम याजो अ-
 मृतरस लावे ॥ भाहुरा०॥४॥

१३. ॥ हो राय न्दा, रमणीना सुजविलसो रं-
 गना लीना ॥ हो यहुराया, अे नगमां लुवन
 छे लग आधीना ॥ अे आंडएी ॥ ने सज्जन
 यात्रा शुल करणी, नवी शोले संघ पती विण
 घरणी, ते भाटे समोहुता थाओ परणी ॥ हो
 रा०॥१॥ डोए परव भहोत्सव तेलवशे, सय्या
 दिक्षु सुज डोए भेलवशे, ते भ आव्यागया डो-
 ए हेलवशे ॥ हो रा०॥२॥ वली घर विवाहने
 डिनएी, पर जट पुंजए विधि कुण न्नएी,

नवी शोले अटला विएराएरी ॥ होराणाडा
 थोड़ेथी घणुं ऊरी न्नएोने उहे लोजभएता हीय
 उ आएोने, शुं कहीयें अमृत समाएोने ॥ होण्ठ
 १४. ॥ हो रठीयाला, राज तुमार आजथी स-
 र्वे न्नेयुं ॥ हो शामलीया, सुंदरीअेक विना तें
 सहु सुष जोयुं ॥ अे आंडएरी ॥ तुमथी तो पं-
 जी न्ने सूडा, अज्ञान लखा पएते झूडा, तुमे-
 सांलसो देवरछु झूडा ॥ होर० ॥ १॥ दिवसे यु-
 ए उरवाने न्नवे, निल मालेसांड पडे आवे,
 लघु बाल प्रीयाशुं सुष पावे ॥ होर० ॥ २॥ शुं
 पंजी न्नत थडी न्नओ, तुमे राजकुमरछु उहेवां
 ओ, डिभ रामारसीया नवी थाओ ॥ होर० ॥
 ३॥ धिग् बुधि तुमारी अपडारी, अम ओ-
 संला हीये गंधारी, उहे अमृत वयणे हितडा-
 री ॥ होर० ॥ ४॥

१५. ॥ हो लखाला, तुम लोयनने लटडे,

ਮन हुरी लोधु ॥ हो सुकुमाला, कुमण्डल
 छुड़ि कुमण्डा डीधु ॥ अे अंडाएँ ॥ अहवी छ-
 जी तु मथी शोहावे, पए नारी विना जोए बो-
 लावे, वली सरबंगे ऊरी नवरावे ॥ हो लट ॥ ४ ॥
 कुए सारा लोनन नीपावे, कुए पीरसे युगते
 भनत्सावे, कुए प्रेमरसे रस जोपन्हये ॥ हो लट ॥
 ॥ २ ॥ निन नारी विसामानुं धम, डोए त्रेवडरन
 जे विण वाम, वली दुःख भाँहे आवे कुम ॥ हो
 लट ॥ ३ ॥ घर लंग थर्युं होय ते नहो, पुछो
 त्रीया सांलरे कुए याए, उहे गोरी अभृत शुं हु-
 ठताए ॥ हो लट ॥ ४ ॥

१६. ॥ हो लाडडउ, नारी विना कुए जेमसे -
 ता हाड़ खुद्युं ॥ हो न्हानडीया, नारी विना परि-
 वार दुवारते भुद्युं ॥ जे अंडाएँ ॥ घरणी विण
 तिहां घर कुए नवे, किम साधु प्रभु ज आदर पा-
 वे, सगो मिन पइयु डोई नवे ॥ हो लाण ॥ १ ॥

વलી વંશ વધારણ છે નારી, કદ્દી રત્ન જાએ
 જગમાં સારી, કિરો તુમ સરિખા નનમ્યા લા-
 રી ॥ હો લાણા રા ઘરણી વિના ઘરસૂત્ર કોણ
 બોલે, તે સાંઠ પરે કિરતોડેલે, વલી લોકમાં
 વાંદો કદ્દી બોલે ॥ હો લાણા ઉ ॥ કરબનલી પડી
 માવઈ રાએની, કહે અમ રહ્યા શું હૃઠતાએની, તુ-
 મે અમૃત મનની સહુ જણી ॥ હો લાણા ર ॥

૧૭. ॥ હે સસનેદી, સે તુમને નથી ગમતું મ-
 હારા લાલા ॥ હે મનમેલી, વાત કહુ શિવા
 દેવીના લાલા ॥ અને અંડણી ॥ ઈમિ વીનવે છે જી
 લુંઝાં ગોપી, શું જાલડ થાઓ કહે કોપી, તુ-
 મે પેછો અંગલોને દોપી ॥ હે સસ ॥ ૧૮. સુ-
 ણી યિતે મલીયું અટાણે, સ્ની જાલડ શઠદૃ
 નવી છાડે, કુણ જિતર સામા અન્ને ॥ હે સસ
 ॥ રાઈમિ યિતિ પ્રલુબુજ વિલખાણુ, તે દેખી
 સહુ ગોપી દાણુ, કહે માન્યુ માન્યુ અમે જણું

॥ आहे सस ॥ आ सहु समस्त थर्ठ जो देह हुर-
जी, नारायण सध खुंते निरजी, धरे पोहोता
अमृत लिन परजी ॥ आहे सस ॥ आ

१८. ॥ धरे आवी ऊन्ह, सभुन्ह विलय संघाते
मसलत झीधी ॥ कहे नेहु निधन नेभीसर विवान
हनी वात प्रसिध्धी ॥ अे आळ एरी ॥ जिग्रसेन
राजनी बेटी छे, राज मती डूपनी पेटी छे, तस
आगल रंला येटी छे ॥ धरे ॥ ते साथेसगा
छ नेडी छे, ने आठ लवांतर रोडी छे, हवे नवमे
लवें शु तोडी छे ॥ धरे ॥ आ पछी लगन न्हे-
शीडे हीधां छे, आवण शुद्धि छहुं लीधां छे, ऊन
बुडे कुपट अडीधां छे ॥ धरे ॥ आ जेहु ठामे स
बर्थाये छे, हवे नेमब्ल परणवा न्येहे छे, ऊहे
अमृत धवल गवाये छे ॥ धरे ॥ आ

१९. ॥ शुल स्तन ऊरी, विधि पूर्वक शणगार
तिलांड शिरधारी ॥ चर षूंपधरी, ऊरधरी श्रीइ-

ल पान उरी असवारी ॥ अे अंड एटी ॥ यदी
जेठरथमां दररान्न, वरतात दशारथ दशता-
न्न, कृष्ण बुद्धलन्नने न्नद्व जन्न ॥ शुलग ॥
यदी हयगय आगल पद्यारी, पाछलरथ जे-
ठी सहुनारी, गाये गीत न्नद्व एटी भतवाली
॥ शुलग ॥ शिर छन्न यामर पासें धारी, वर-
साजन भाहालन शुं लारी, वाले ढोल सरए ॥
ई लुंगल लारी ॥ शुलग ॥ उ ॥ प्रलु जन सज्ज
जनता उहे छे, उहे सारथीने रथने वहे छे, उहे
अभृत तुभ सुसरो रहे छे ॥ शुलग ॥

२० रास जी महोल यदी, शशी वय एटी मृ-
गनय एटी राजुस साथे ॥ न्ने ई उंत छ जी, यिंते
हुं वड लागए सहुने भाथे ॥ अे अंड एटी ॥ ति-
हां स जी औनो आशय ज्ञ एटी, अे शामली ज्ञो
वर गुण ज्ञ एटी, समन्वे जहु ज्ञ गते आएटी ॥
स जी ॥ अहवे वर तोरए आवे छे, सहु पन-

શુભા રાવ સુણાવે છે, હે સારથી અનેશું ઊહાન
વે છે॥ સખીનારા ઊહે સારથી તુમ ગોરવ
દેશે, સહુ જન્મવ પશુના લક્ષ લેશે, સુણી
ધિગ् ધિગ् વિવાહને વેરોં॥ સખીનારા સહુ
પશુ વાટ ઊથી છોડવીયા, પ્રલુ રથ ફેરી પાછા
વલીયા, ઊહે અમૃત નિન પંથે ભલીયા॥ સં
ખીનારા

૨૧ તે જબર થઈ, દાહિએ ઝરડી આં-
ઝરાનુસની પહેલાં॥ પ્રલુ માત લહી, તાત
લહી વલી વાત થયાંતે ઘરેલાં॥ અંજોડાંની
ારથ નલી માતડરી આડો, ઊહે જન્મવ માંશું
લન્દવાડો, અમ ડેમ કરીયેં અં લન્દવાડો॥ તે
ઝ॥ ૧॥ મુન માણ્યું લાડકડા દીને, ઘર હૃણ
હુસારથ નવી ડીને, હરિવંશ વિલૂષ્ણ નસસી-
નેં॥ તે જબળારા વહુનો મુખ પરણી હેખાડો,
મુન અનેહુ મનોરથ સંપાડો, ઝાં ઝાંખ્યું પીંન્યું વિણા

साडो॥ ते ज्य०॥ आहे भाता आय्रहुने वामो, मुळ
मुळिवधूंशुं छे उमो, उही पोहोता अमृत निज
गमो॥ ते ज्यबर०॥ ४॥

२२. आहे दैव डिश्युं, अम उही मूर्छा पामी
राब्जुल नारी॥ संजीवं द्वनशुं, शीतल वाय उरी-
ने लेहु निवारी॥ अंगांडणी॥ तिहां रोती जोड
ले हुः अलरीयां, हायाद्वकुलना ठाउरीयां,
मुने भूडी पाछा डेम इरियां॥ आहे दैव०॥ ५॥ हा
धीठ नीछुर हीयउ रहे छे, हा निर्लङ्घ लुवि-
त किम वहे छे, निच्यासो ओलंलो वसी दीहे
छे॥ आहे दैवणा॥ ६॥ ने सधला सिव्यना लुडता-
री, ते शिवदधू गणिका धूतारी, तेही शुरा-
यो सहु हुरी॥ आहे दैव०॥ ७॥ मुळ उहे वतने
तुंशुरे लहे, अहो दली नर ते अम दहे, उहे
अमृत अरथी शुं न उहे॥ आहे दैव०॥ ८॥

२३. आतमे पातखीया, पेशुआने शिर दोष

દેઈરથ વાલ્યો ॥ હો શામતીયા, શું જેઠી
 આલ્યા જેસ હુરખ સહુ ટાલ્યો ॥ અને આંડાએ
 ॥ તુમે હુરણાને ઉહે શું લાગા, કુણ પતી આવે
 પેહું વાગા, તે આગા સહુથી ને નાગા ॥ તમેન
 રાશા અણે ચંદુલંડી ડીધો છે, સીતાને વિયો-
 ગ તે દીધો છે. અને નામ કુરંગ પ્રસિધ્યો છે ॥ તુ-
 મેન ॥ રા ॥ તે ભારે પાછા ફરી આવો, શું યાદ્વ
 કુલમાં શરમાવો, શું યુગ યુગ ડેહેવતુ કહેવ-
 રાવો ॥ તુમે ॥ તુમે વિરહુ તણો જાણો છે
 ચા, રાણી રાન્નુલના હીયજા લેવા, તુમે અમૃ-
 ત સુષેજા નવિ વેદ્યા ॥ તુમે ॥ જરા

૨૪. ॥ હું તો લૂલી ગર્દી, શુદ્ધ બુદ્ધ સરવે
 શાન થઈ બેઢાલી ॥ હું તો ઘરેલી થઈ, મુને
 ઘરમાં નથી ગમતું માહારા વાલા ॥ અને આંડ
 એ ॥ જા મંદિર જાવા ધાયે છે, મુને વરસ્ત સર
 મો દિન થાયે છે, બુગ સરખી રયાએ જન્મે

છે॥ હું તો॥ પા॥ મુને અસત્તબસત્ત ઘણુ દાગે છે,
 હસાહૃત સરીજા લાગે છે, મુને મોહન લડકાવા
 ગે છે॥ હું તો॥ રા॥ જુઓ રાજ વિશ્વારી મન માંહે,
 અધર્થિધરી શંકર યાહે, તો કર બલસત્તા શું યાહે॥
 હું તો॥ તા॥ તું મૂકી યાખ્યો આવેશો, મુને લોકડી-
 ચાંગુટીલેશો, ડહે અમૃત કેઈ મેહુ એદેશો॥ હું તો॥ રાજાઈ
 ૨૫. રાખરે નિઃસનેહી, નિપટ નિહેલ નાથ
 ઊરી નાદની॥ તેં લલી ઊરી નિન્દ નારી તલુ વાત
 પશુની માની॥ જે અંડાએ, તુલ મનમાં ગેહુવી
 હુંતી વેહેલાં, તો નિશ્ચય નવિ કરતી પહેલાં, હવે
 નાગો ધર્થ ડાઢે ગહેલાં॥ ખરે॥ તાદ્વાં
 જેહુમાં ડાઈ નવી લશે, સાપણ વિષકળ્યા કા-
 હેવાસે, જેમ બગમાંહે તેહેવત યાશો॥ ખરે॥ રાજ
 રાતેં મેમ ઉલ્ઘત ઝડતરીઓ, વલી યોગ ડનાં
 તરાતેં ધરીઓ, પણ મેં તો આલવ તું વરીઓ॥
 ખરે॥ જાડા બહુ મોહદિશા મનમાં લાવી, જેમ

उरतां तत्त्व दृशा लावी, उहे अमृत पायु पासें आवी
वीरा अरेना ॥ ४ ॥

२६ प्रलु दीतकरी, संयम आपी थापी शिवप-
दनारी, न्नां बसिहारी नवमें लवेनिरानें
पढ़िसां तारी ॥ जे अंडाई ॥ सह सावन सधली
ऋषि न्नेडी, शिव पोहोता उरम लरम त्रोडी, नेमी
रालु ल अवियज थठि न्नेडी ॥ प्रलुगाणा भसीगोपी
संवाद सुएगव्यो छे, श्रीनेमि विवाह मनाव्यो छे, छनि
हांते अधिकार अनाव्यो छे ॥ प्रलुणा राडीओ
अढारशें ओगए चालें, काती वहि पंथभीरवि-
वारें, जे योवीश योड यतुर धारे ॥ प्रलुणा ॥
शुद्ध रलविजय पंडित राया, बुध शिष्य विवेड वि-
वेड विजय लाया, तस शिष्य अमृते शुएगाया ॥
राईति श्रीनेमि राजुल संवादे अष्ट स्त्रीव-
र्णि संबाधन उवि अमृतविजय गणि विर-
गिते योवीश योड संपूर्णभू ॥ ॥

समाना.